भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक– साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : ३१

सोमवार ५ मई, '६९

अन्य पृष्ठों पर

तिरुपति का संघ अधिवेशन

तीन नयी समितियाँ —सम्पादकीय ३७९

बम्बई जैसे शहरों में...

—दादा धर्माधिकारी ३८०

तंजोर में तनाव... —शंकरराव देव ३८२

उड़ीसा का पहला जिलादान...

—गायत्री प्रसाद शर्मा ३८४

ग्रामदान-अभियान के अनुभव... ३८६

सर्वसम्मति की अनोखी मिसाल...

—रामचन्द्र 'राही' ३८७

शराबबन्दी पर सर्व सेवा संघ

का प्रस्ताव... ३८९

सर्व सेवा संघ का निवेदन ३९२

सत्य में समदर्शन है, समाधान है, अन्तःसमाधान है। तेरे अन्तर में एक आवाज उठती है। उसके साथ तू चलता है, तो सत्य पर चलता है, ऐसा होगा। फिर तो तुझे गंगा जाने की, तीर्थ नहाने की जरूरत नहीं। न्याय-निर्णय देते समय न्यायाधीश सत्य पर रहने की कोशिश करता है। जहाँ सत्ययुक्त निर्णय होता है, वहाँ सत्व है। —विनोबा

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी–१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

अहिंसक अर्थ-व्यवस्था

मैं कहना चाहता हूँ कि हम सब एक तरह से चोर हैं। अगर मैं कोई ऐसी चीज लेता और रखता हूँ, जिसकी मुझे अपने किसी तात्कालिक उपयोग के लिए जरूरत नहीं है, तो मैं उसकी किसी दूसरे से चोरी ही करता हूँ। यह प्रकृति का एक निरपवाद बुनियादी नियम है कि वह रोज केवल उतना ही पैदा करती है जितना हमें चाहिए। और यदि हर एक आदमी जितना उसे चाहिए उतना ही ले, ज्यादा न ले, तो दुनिया में गरीबी न रहे और कोई आदमी भूखा न मरे। मैं समाजवादी नहीं हूँ और जिनके पास सम्पत्ति का संचय है उनसे मैं उसे छीनना नहीं चाहता। लेकिन मैं यह जरूर कहता हूँ कि हममें से जो लोग प्रकाश की खोज में प्रयत्नशील हैं उन्हें व्यक्तिगत तौर पर इस नियम का पालन करना चाहिए। मैं किसी से उसकी सम्पत्ति छीनना नहीं चाहता, क्योंकि वैसा करूँ तो मैं अहिंसा के नियम से च्युत हो जाऊँगा। यदि किसी के पास मेरी अपेक्षा ज्यादा सम्पत्ति है तो भले रहे। लेकिन यदि मुझे अपना जीवन नियम के अनुसार गढ़ना है तो मैं ऐसी कोई चीज अपने पास नहीं रख सकता जिसकी मुझे जरूरत नहीं है। भारत में लाखों लोग ऐसे हैं जिन्हें दिन में केवल एक ही बार खाकर संतोष कर लेना पड़ता है और उनके उस भोजन में भी सूखी रोटी और चुटकी भर नमक के सिवा और कुछ नहीं होता। हमारे पास जो कुछ भी है उस पर हमें और आपको तब तक कोई अधिकार नहीं है जब तक इन लोगों के पास पहिनने के लिए कपड़ा और खाने के लिए अन्न नहीं हो जाता। हममें और आपमें ज्यादा समझ होने की आशा की जाती है। अतः हमें अपनी जरूरतों का नियमन करना चाहिए और स्वेच्छापूर्वक अमुक अभाव भी सहना चाहिए, जिससे कि उन गरीबों का पालन-पोषण हो सके, उन्हें कपड़ा और अन्न मिल सके।[1]

मेरी सूचना है कि यदि भारत को अपना विकास अहिंसा की दिशा में करना है, तो उसे बहुत-सी चीजों का विकेन्द्रीकरण करना पड़ेगा। केन्द्रीकरण किया जाय तो फिर उसे कायम रखने के लिए और उसकी रक्षा के लिए हिंस-बल अनिवार्य है। जिनमें चोरी करने या लूटने के लिए कुछ है ही नहीं ऐसे सादे घरों की रक्षा के लिए पुलिस की जरूरत नहीं होती। लेकिन धनवानों के महलों के लिए अवश्य बलवान पहरेदार चाहिए, जो डाकुओं से उनकी रक्षा करें। यही बात बड़े-बड़े कारखानों की है। गाँवों को मुख्य मानकर जिस भारत का निर्माण होगा उसे शहर प्रधान भारत की अपेक्षा—शहर-प्रधान भारत जल, स्थल और वायुसेनाओं से सुसज्जित होगा तो भी—विदेशी आक्रमण का कम खतरा रहेगा।[2]

मो. क. गांधी

(१) स्पीचेज एण्ड राईटिंग्ज आफ महात्मा गांधी, पृष्ठ ३८४.
(२) 'हरिजन', ३०-१२-'३९.

www.vinoba.in

एस० जगन्नाथन्

श्री शंकरलिंगम् जगन्नाथन्, सर्व सेवा संघ के नये अध्यक्ष, सरल, सीधे और विशिष्ट व्यक्तित्ववाले, स्वभाव से नम्र और संकोची हैं। इनके जीवन का कण-कण सेवा से ओत-प्रोत है। किसान और मजदूरों के इस विनम्र सेवक का सारा जीवन अहिंसक सत्याग्रह की एक शृङ्खला से भरा हुआ है। सन् १९६५-६६ में मदुराई के मीनाक्षी मन्दिर की भूमि के सम्बन्ध में उन्होंने एक अहिंसक सत्याग्रह का नेतृत्व कर गरीब किसानों की भूमि-सम्बन्धी समस्या का निवारण कराया था। तभी से तमिलनाडु में श्री जगन्नाथन् लोकप्रिय हो गये।

१८ वर्ष की अल्पायु में अपनी शिक्षा का परित्याग कर १९३२ में श्रीजगन्नाथन् राजनैतिक आंदोलन में कूद पड़े। १९४० ई० के आस-पास गांधीजी के सम्पर्क में आने के बाद जगन्नाथनजी ने तमिलनाडु के हरिजन सेवक संघ में कार्य करना स्वीकार किया। १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन में शरीक हुए और साढ़े तीन वर्ष तक जेल-यात्रा की। १९४७ में मदुराई के गांधीग्राम में रचनात्मक कार्यकर्ता संघ की स्थापना की और यहीं से हरिजन तथा पीड़ित गरीबों का उद्धार करने का आन्दोलन छेड़ दिया।

१९५२ में श्रीजगन्नाथन् ने सर्वोदय आन्दोलन में प्रवेश किया और पहली बार लगभग ६ महीने तक विनोबाजी के साथ पदयात्रा में रहे। १९६२ में श्री जगन्नाथन् बेरुत में हुए वार रेसिस्टर्स इण्टरनेशनल के सम्मेलन में गये थे और उसके बाद यूरोप तथा रूस की यात्रा की।

ठाकुरदास बंग

नवगठित सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री ठाकुरदास बंग सर्वोदय आन्दोलन में आने के पूर्व गोविन्दराम सेकसरिया कामर्स कालेज (वर्धा) में प्रोफेसर थे। उन्हीं दिनों विनोबाजी ने कांचनमुक्ति का प्रयोग किया जिससे प्रभावित होकर श्री बंग ने सर्वोदय आन्दोलन में रुचि लेनी शुरू की और रचनात्मक जीवन बिताने का निश्चय किया। फलतः प्रोफेसरी छोड़कर विनोबा के आन्दोलन में कूद पड़े। शरीरश्रम और खेती ही इनकी जीविका का साधन थी।

महाराष्ट्र में भूदान से लेकर ग्रामदान

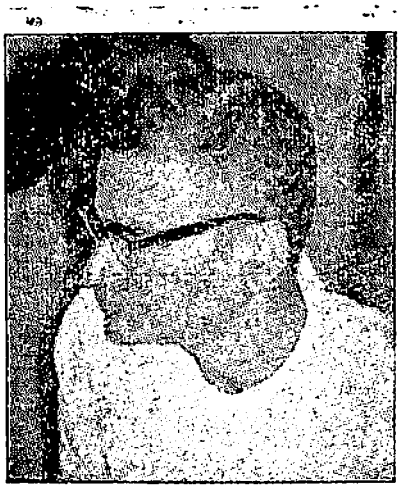

संघ के नये मंत्री

आन्दोलन तक के प्रमुख नेताओं और मार्गदर्शकों में श्री बंग एक हैं। इनके मार्गदर्शन में वर्धा से मराठी साप्ताहिक "साम्ययोग" प्रकाशित होता है।

राधाकृष्ण —अलविदा— मनमोहन

हमारे दोनों, मनमोहन और राधाकृष्ण की मूर्तियां दो थीं पर दोनों मूर्तियों में विभूति एक थी, दोनों का संयुक्त व्यक्तित्व था। हम लोगों ने सोचा था कि ६० के बाद के लोगों का निवृत्त जीवन मान लें। तरुण ही संघ की बागडोर सम्भालें। बूढ़ों में हिम्मत कम होती जाती है। वह अपनी चाभी पुत्र को सौंपता है तो डरते-डरते सौंपता है। पर संघ ने इन दोनों की तरुणाई में विश्वास किया। निरंतर तरुणाई ईश्वर का गुण माना गया है। तरुणाई के प्रतीक मनमोहन और राधाकृष्ण हैं। बड़ी ही कुशलता और चतुरता से सर्व सेवा संघ का काम इन दोनों ने चलाया। आप सबकी ओर से इन दोनों का मैं अभिनन्दन करता हूँ।

—दादा धर्माधिकारी

www.vinoba.in

सम्पादकीय

तिरुपति का संघ अधिवेशन

तिरुपति में हमने पुराने अध्यक्ष और उनके साथियों को 'विदा' कहा, तथा नये अध्यक्ष और उनके साथियों का स्वागत किया। भाई श्री जगन्नाथन्‌जी, श्री ठाकुरदास बंग, श्री नरेन्द्र दुबे और श्री कान्ता बहन हमारे उन साथियों में हैं जिनकी पहली और अन्तिम निष्ठा ग्रामदान मूलक क्रान्ति में है। उन्होंने सेवा का यह नया अवसर अपने त्याग और समर्थन से प्राप्त किया है। हमने उन्हें आदर दिया है, उनके ऊपर आन्दोलन का उत्तरदायित्व सौंपा है। हमने ऐसा इस विश्वास से किया है कि उनके सबल हाथों में हमारी क्रान्ति सुरक्षित है। तिरुपति के संघ अधिवेशन में और कुछ न भी हुआ होता फिर भी हम उसे याद करते सिर्फ इसलिए कि वहाँ हमें जगन्नाथन्, बंग, नरेन्द्र, और कान्ता जैसे साथी मिले।

वस्तुतः तिरुपति में इसके अलावा दूसरा कुछ महत्त्व का हुआ भी नहीं। बल्कि कई बार तो ऐसा लगता था कि क्या इतने के लिए ही हम लोग इतनी शक्ति, इतना समय और इतना पैसा लगाकर इकट्ठा हुए हैं, यद्यपि इकट्ठा होनेवालों की संख्या भी बहुत सीमित थी। न थे हमारे लोकसेवक और न थे जिलों के प्रतिनिधि, जिन्हें मिलाकर सर्व सेवा संघ बनता है। और, जो आये भी थे उन्होंने किया क्या? किसी चीज की गहराई में वे गये? एजेण्डा बड़ा, विचारणीय मुद्दे बहुत, कागजों का पुलिन्दा मोटा, गम्भीर विषय कितने, लेकिन चर्चा? नहीं के बराबर। हमारे आन्दोलन का उदार से उदार मित्र भी वहाँ हमारी चर्चाओं को देखकर यह नहीं कह सकता था कि यह समुदाय उन क्रान्तिकारियों का है जो कुछ बड़ा सोचने और करने के लिए इकट्ठा हुआ है। आश्चर्य तो यह है कि यह स्थिति उस वर्ष के अधिवेशन में थी जो गांधी का शताब्दी वर्ष है, और जिसमें विनोबा के आन्दोलन का सबसे बड़ा कौतुक शीघ्र पूरा होने जा रहा है—राज्यदान। निश्चित ही इस हालत में सुधार होना चाहिए, लेकिन सुधार तो तब होगा जब हमें चिन्ता हो, यह तलाश करने की कि ऐसी हालत है क्यों? प्रसन्नता की बात है कि प्रबन्ध समिति का ध्यान ग्रामदानी गाँवों के संगठन, लोकसेवकों के संघ और सर्वोदय प्रेमियों के व्यापक भाई-चारे की ओर गया है, और एक समिति भी नियुक्त हुई है। पहले दिन की पहली बैठक में श्री खण्डुभाई देसाई ने कहा था कि यह सर्व सेवा संघ की आवाज गांधी की आवाज है। बहुत बड़ी बात कही उन्होंने, और सही भी कही, लेकिन गांधी की आवाज में एक ओर सत्य का बल था, और दूसरी ओर 'सर्व' का, जिसने उस सत्य को अपना सत्य माना था। हमारे पास सत्य का बल भले ही हो, लेकिन यह कौन कहेगा कि उस सत्य के पीछे सर्व का भी बल है? अगर सर्व का बल न हो तो सर्वसम्मति का क्या बल होगा? शायद सारी कमजोरियों की जड़ इसमें है कि अभी हमारी शक्ति बुनियाद में ही नहीं बनी है। इसी-लिए न दिखाई देते हैं लोकसेवक, न प्राथमिक सर्वोदय मण्डल, और न जिले और न उनके प्रतिनिधि। क्या सर्व सेवा संघ का भव्य-भवन ऐसी दीवारों पर खड़ा होगा, जो खुद खड़ी न हों, और सर्वोदय आन्दोलन ऐसे 'सर्व' पर चलेगा जिसका खुद पता न हो?

हमारे सामने एक चेतावनी मौजूद है। गांधी को पाकर, और अपनी स्वतंत्र शक्ति रखते हुए भी आखिर कांग्रेस ने अपने को खो दिया। कहीं ऐसा न हो कि विनोबा को पाकर भी हमारे लिए वही बात कही जाय। अगर हमने नीचे से ऊपर तक सामूहिक शक्ति नहीं विकसित की तो दूसरा क्या कहा जायेगा? तिरुपति में जो कमी सामने आयी वह सुधार की प्रेरणा दे, यही हमारी कामना और कोशिश होनी चाहिए।

तीन नयी समितियाँ

इस बार प्रबन्ध समिति ने तीन नयी समितियाँ बनायी हैं:—एक, श्री राममूर्ति की अध्यक्षता में ग्रामस्वराज्य समिति; दो, श्री मनमोहन की अध्यक्षता में प्रशिक्षण समिति; तीन, श्री सिद्धराज की अध्यक्षता में नगर-कार्य समिति। हमारा आन्दोलन ऐसी स्थिति में पहुँच गया है कि इन तीनों कामों का बहुत ज्यादा महत्त्व महसूस किया जा रहा है। बिहारदान अब कितनी दूर है? और, बिहारदान के पूरा होते ही ग्रामस्वराज्य का अभियान शुरू हो जाता है। कठिन चढ़ाई है, लेकिन इसी में ग्रामदान की परीक्षा भी है। बराबर प्रश्न पूछा जाता रहा है, 'ग्रामदान के बाद क्या?' उत्तर है, 'ग्रामस्वराज्य'। उस ग्रामस्वराज्य की साधना अब शुरू होनी चाहिए—केवल बिहार में ही नहीं, बल्कि तमाम दूसरे जिलादानी क्षेत्रों में। जरूरत है कि ऐसे सभी क्षेत्रों में अभियान के तौर पर विचार-शिविर चलाये जायँ; और उसके बाद स्वायत्त ग्रामसभाओं के संगठन का काम सघन तौर पर किया जाय, ताकि एक ओर ग्रामदान की शर्तें पूरी हों और दूसरी ओर गाँव दलमुक्त राज्य-व्यवस्था के लिए तैयार हों। शुरू में पूरे-पूरे जिले न लेकर चुने हुए प्रयोग क्षेत्र लिये जा सकते हैं, लिये जाने चाहिये भी। हर क्षेत्र को कोई न कोई एक समर्थ साथी अपने हाथ में ले। उस क्षेत्र में लोकशक्ति के संगठन और शिक्षण के लिए वह अपने को दूसरी जिम्मेदारियों से मुक्त रखे।

बढ़ते हुए आन्दोलन की माँग है कि पुराने और नये कार्यकर्ताओं का, चाहे वे संस्था के हों या नागरिक हों, समुचित शिक्षण-प्रशिक्षण हो। एक बार नहीं, बराबर होता रहे, ताकि कार्यकर्ता हर नयी परिस्थिति का मुकाबिला करने में समर्थ हो सके।

अभी तक हमारा लगभग पूरा जोर गाँवों पर ही रहा है। यह हमने जान-बूझकर किया, और ऐसा करने में हमने कोई गलती भी नहीं की। ग्रामस्वराज्य की सारी कल्पना ही ग्राम-केन्द्रित है। इसके अलावा किसी खेतिहर देश में क्रान्ति—लोकक्रान्ति—गाँव और खेती-केन्द्रित ही हो सकती है। लेकिन अब समय आ गया है कि ग्रामस्वराज्य की आवाज जोरदार ढंग से शहरों में पहुँचे और शहर अपने→

www.vinoba.in

बम्बई जैसे शहरों में समन्वित जीवन विकसित हो

दादा धर्माधिकारी

हमारे मित्रों ने कहा कि हमारा यह देश बहु-राष्ट्रीय (multi-national) है।

बहुराष्ट्रीय से मतलब, जिसमें छोटे-छोटे उपराष्ट्र हैं। जितनी भाषाएँ उतने राष्ट्र, जितनी जाति (race) मानववंश—उतने राष्ट्र—यह उनका चित्र है। इसलिए यह छोटे-छोटे राष्ट्रों का एक संघ (फेडरेशन) होगा ऐसी उनकी कल्पना है। यह अवैज्ञानिक है और अवास्तविक है। इसमें जरा भी वास्तविकता नहीं है। अगर इस देश के लिए द्विराष्ट्रवाद मिथ्या है, तो आजकल जो लोग बहुराष्ट्रवाद का प्रतिपादन कर रहे हैं उनका बहुराष्ट्रवाद भी मिथ्या है, भ्रम है। एक मूलभूत एकता बहुत पुराने जमाने से इस देश में रही है। राष्ट्रीयता तो नहीं रही, लेकिन एक मूलभूत एकता रही। इसलिए हमारे इस देश की उपमा किसी दूसरे देश के साथ नहीं दी जा सकती। दुनिया में बहुभाषिक राष्ट्र हैं, दुनिया में ऐसे भी राष्ट्र हैं जिनमें अलग-अलग मानववंश रह रहे हैं। लेकिन उन सबसे हमारा देश कुछ अलग है। इसलिए जैसे क्रान्तिवाले कहते हैं रेडीमेड क्रान्ति कहीं से नहीं आ सकती, उसी तरह से कोई राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की नकल इस तरह से नहीं बन सकता है। यह बहुराष्ट्रवाद हमारे देश में जड़ पकड़ रहा है। बेलगाँव का वाद, बहुराष्ट्रवाद का झगड़ा है। नदियों के झगड़े बहुराष्ट्रवाद के झगड़े हैं। सामान्य मनुष्य जिस भाषा को समझता है और जिस भाषा में व्यवहार करता है उस भाषा में राज्य का शिक्षण और राज्य का कारोबार चलना चाहिए। माँग उचित है। लेकिन भिन्न भाषिक लोग एक साथ रहें इसकी क्या कोशिश हो रही है? भिन्नभाषिक जनता एक दूसरे के निकट आयें, क्या इसकी आवश्यकता इस देश को नहीं है? और अगर है, तो उस दिशा में कदम कैसे बढ़ायेंगे? कदम बढ़ चुका है। अंग्रेजों के राज्य में ही बढ़ चुका है। बम्बई जैसे शहर, जहाँ पर अनेक भाषाएँ बोलनेवाले लोग इकट्ठा हो गये हैं। वह बहु-भाषिक है, इसलिए यहाँ पर भाषिक दुराग्रह, दुरभिमान नहीं होना चाहिए। और, यहाँ नहीं होना चाहिए, तो कहीं नहीं होना चाहिए। भिन्न-भाषिक लोग एक दूसरे के साथ रह सकें यह परिस्थिति देश के नेताओं को पैदा करनी चाहिए। और, अगर नेता नहीं करते हैं तो हमको कहना चाहिए कि यह परिस्थिति आनी चाहिए। इसका एकही

इस देश के गरीब लोग अब इस कोशिश में हैं कि हमको कोई पूछे, और हमको अगर कोई नहीं पूछता है, तो जो उपद्रव करेंगे उनके पीछे हम जायेंगे। इसी तरह से जो पिछड़ी हुई छोटी-छोटी जमातें हैं उनकी यह कोशिश है कि हमारी अस्मिता को लोग स्वीकारें। नागा, खँसी, गारो, संथाल, गोंड़, भील, कोरकूये, सब अब कह रहे हैं कि हमारी अपनी कुछ अस्मिता है। हमारी अपनी भी एक संस्कृति है। हमारी अपनी भी एक जीवन-पद्धति है। इसका संरक्षण करना चाहते तो हैं ही। ये नारे हैं। मित्रो, ये सारे भ्रम हैं। लेकिन ये नारे लोगों के दिल को पकड़ लेते हैं। क्या ये खँसी, नागा, संथाल—जैसे आज तक रहते थे वैसे रहना चाहते हैं? उनमें से कोई वैसा नहीं रहना चाहता है। नागालैंड में सारे पढ़े-लिखे लोग यूरोपियन पोशाक पहनते हैं। लड़कियाँ सब यूरोपियन पोशाक में चलती हैं। खँसी सब पढ़े-लिखे हैं। रोमन लिपि में लिखते हैं, अंग्रेजी बोलते हैं। आधुनिक जीवन सब अपनाना चाहते हैं। लेकिन इसके साथ-साथ अपनी अस्मिता को भी रखना चाहते हैं। इसका नतीजा यह हैं कि अलगाव की एक भावना जोर पकड़ रही है।

द्विराष्ट्रवाद बनाम बहुराष्ट्रवाद

जयप्रकाश बाबू ने एक दफा कहा कि छोटे-छोटे राज्य होंगे तो अच्छा होगा। लोगों ने इसका मतलब यह किया कि छोटे राज्य से मतलब अपने जाति का राज्य; परन्तु छोटे राज्य से मतलब है व्यापक राज्य, जो छोटे पैमाने पर होगा। थोड़ी देर के लिए मान लीजिए कि छोटे राज्य वांछनीय हैं। तो भी वे मिले-जुले और व्यापक होने चाहिए। व्यापकता और विशालता में अंतर है। विशालता केवल आकार में होती है। आप कल्पना कीजिए। दस हजार आदमी बैठे हुए हैं लेकिन सब एक ही जाति के हैं, सभा बहुत बड़ी है। वह विशाल है लेकिन व्यापक नहीं है। व्यापकता तब होती है जब वह सबका समावेश करती है। आकार छोटा हो, लेकिन जिसमें सबका समावेश करने की वृत्ति हो वह व्यापक है। छोटे राज्य हों लेकिन व्यापक हों तो छोटे राज्यों से लाभ होगा। छोटे राज्य हों लेकिन व्यावर्तक हों, व्यावर्तक से मतलब अपवर्जक (exclusive) अपनी भाषा के, अपने सम्प्रदाय के, अपनी जाति के, तो ये छोटे राज्य अपनी मानवता का ह्रास करेंगे और वे छोटे राज्य राष्ट्रीयता का नाश करेंगे।

→विकास के लिए ग्राम-स्वराज्य के मूल्य ग्रहण करें। क्या गाँव और क्या शहर, दोनों के लिए क्रान्ति के मूल्य एक ही हैं।

इन तीनों समितियों के काम बहुत कुछ परस्पर पूरक हैं। फिर भी काफी हद तक अलग-अलग भी किये जा सकते हैं। इसलिए तीन समितियाँ बनायी गयी हैं। हमारा निवेदन है कि हर साथी अपनी रुचि, शक्ति और परिस्थिति के अनुसार इन समितियों से सम्पर्क स्थापित करे। उसे स्थानीय तौर पर अपने चारों ओर एक सक्रिय 'सेल' बनानी पड़ेगी। ऐसी सक्रिय 'सेलें' गाँव-गाँव, मुहल्ले-मुहल्ले में होनी चाहिए ताकि हर जगह नयी चेतना और नयी सक्रियता की लहर दिखाई दे।

प्रबन्ध समिति ने सही वक्त पर सही कदम उठाया है। हम अपनी-अपनी जगह रहकर उस कदम में कदम मिलाने की कोशिश करें।

एक चौथी प्रवृत्ति ग्रामदान के बाद विकास की है। नयी नहीं है, पुरानी है। कई क्षेत्रों में विकास के सघन काम होते रहे हैं जिन्हें अब तक के मंत्री श्री राधाकृष्णनजी देखते रहे हैं। अब दिल्ली शान्ति प्रतिष्ठान में चले गये हैं लेकिन विकास के काम को प्रबन्ध समिति की ओर से वह देखते रहेंगे।

www.vinoba.in

सूत्र है—हमको भाषा से मनुष्य अधिक प्रिय है—पहले मनुष्य बाद में भाषा।

सम्प्रदायवाद बनाम प्रतिसम्प्रदायवाद

अब सम्प्रदाय को लें। इस्लामियत कौमियत है कहाँ? पाकिस्तान में इस्लामियत्व अगर कौमियत्व नहीं है तो हिन्दुत्व भी राष्ट्रीयत्व नहीं है। हिन्दुत्व भी भारतीयत्व नहीं है। पाकिस्तानवादी सम्प्रदायवादी है। हिन्दुत्ववादी प्रतिसम्प्रदायवादी है। तो संप्रदायवाद चाहे असली हो चाहे जवाबी हो, दोनों की शकल एक है। दोनों के गुणधर्म एक हैं। जो साम्प्रदायिक संस्थाएँ और संगठन इस देश में हैं उनकी तरफ आपको ध्यान देना चाहिए। उनमें से जो ऐसे हैं जो अपने सम्प्रदाय का सम्बन्ध नागरिकता से जोड़ना चाहते हैं,—उनको बहुत खतरनाक मानना चाहिए। जो सम्प्रदाय का सम्बन्ध नागरिकता से, सम्प्रदाय का सम्बन्ध राज्य से, राष्ट्र से जोड़ना चाहते हैं वे खतरनाक हैं।

पुराना शब्द हमारे यहाँ है—विश्व-कुटुम्ब। मैं कई बार दोहरा चुका हूँ कि कौटुम्बिकता में हार्दिकता होती है और नागरिकता में औपचारिकता होती है। तो अब नागरिकता को कौटुम्बिकता की दिशा में मोड़ना होगा। और इसका आधार होगा—मैत्री, मित्रता (Fellowship) दूसरा इसका आधार हो नहीं सकता। यह एक नया समाज कायम करने की कोशिश है। विश्वामित्र की तरह यह समानान्तर (Parallel) सृष्टि नहीं। ब्रह्मदेव के मुकाबिले में विश्वामित्र ने कहा कि मैं अपनी अलग सृष्टि बनाऊँगा—जैसे समानान्तर सरकार (Parallel Govt.) वाले होते हैं—प्रतिसरकार की तरह प्रतिसृष्टि का निर्माण। और उसने इस तरह की कोशिश की इसलिए उसका नाम विश्वामित्र हुआ। असल में वह समास है—विश्व और अमित्र; विश्व और मित्र का अगर समास होता तो विश्वमित्र होना चाहिए। विश्व और अमित्र हुआ। लेकिन वह तपस्वी था। और आप जानते हैं कि तपस्या से शक्ति प्राप्त होती है। उस शक्ति का उपयोग भी हो सकता है और दुरुपयोग भी। वह विश्वामित्र बड़ा क्रोधी था। उसने कहा कि मेरे नाम का अर्थ विश्व और अमित्र अगर कोई करेगा तो वह जी नहीं सकेगा। तो फिर वैय्याकरणीय ने क्या किया? व्याकरण में पाणिनी ने कहा कि भाई विश्वामित्र ऋषि के नाम में विश्वमित्र ही इसका अर्थ होगा। विश्वामित्र नहीं होगा। एक नया सूत्र बना दिया। ऐसा आज का विज्ञानवाला कर रहा है। आज का वैज्ञानिक यह कर रहा है। वह सत्ताधारियों के इशारे पर नाच रहा है। वह नहीं नाचेगा तो जी नहीं सकेगा। नतीजा यह है कि फ्रान्स में अब बुद्धिमान लोग और साहित्यिक आगे आ रहे हैं। वे यह कह रहे हैं कि इन क्रान्तिकारियों ने, पुराने समाजवाद ने, पुराने साम्यवाद ने हमको धोका दिया। अब हमको यह निश्चय कर लेना होगा कि हम डंडेवाले के सामने सिर नहीं झुकायेंगे। पैसेवाले को सलाम नहीं करेंगे। क्या यह निश्चय आप और हम कर सकते हैं? बस, यह है कसौटी का अंतिम प्रश्न।

शान्तिसैनिक क्या करें?

आज देखिए न, मृत्यु का बोलबाला है। मृत्युलोक तो है ही। यहाँ प्रतिष्ठा जीवन की होनी चाहिए थी। एक कहता है कि मेरी बात नहीं मानोगे तो अपने आपको जला लूँगा। दूसरा कहता है कि अपने आपको जलाऊँगा लेकिन तुमको भी साथ साथ जलाऊँगा। याने जो मरने और मारने को तैयार है, परिस्थिति उसके हाथ में चली जाती है। हमारे सामने सवाल यह है कि क्या हम भी अपने जीवन को उत्सर्ग करने के लिए तैयार हैं? पाकिस्तान में बेचारे अयूब को कहना पड़ा कि लोग आतंकित होकर जी रहे हैं। हमारे यहाँ कोई कहता नहीं है। लेकिन साधारण नागरिक आतंक में जी रहा है। हड़ताल की जरा सी बात कहीं निकल जाय, दुकानें एकदम बन्द हो जाती हैं। हर सभ्य नागरिक अपने-अपने घर में छिपा रहता है। इसको कोई छूता नहीं, छेड़ता नहीं, क्योंकि वह उपद्रवकारियों का मुकाबिला नहीं कर रहा है। लोग हमसे कहते हैं कि सिर्फ सरकारी सम्पत्ति जलायी गयी। सरकारी सम्पत्ति इसलिए जलायी गयी कि सरकार विरोध में खड़ी मालूम होती है। हमारी आपकी सम्पत्ति इसलिए नहीं जलायी गयी कि हम कहीं हैं नहीं। हर मौके पर आप जा सकेंगे और रोक सकेंगे, असम्भव है। सरकार की पुलिस और फौज नहीं कर सकती है तो मुट्ठीभर शांति-सैनिक कर सकेंगे? लेकिन एक भी मौका अगर ऐसा आ जाता है जहाँ आप जान की बाजी लगाकर अड़ जाते हैं, तो मैं आपसे विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि सारी खासियत बदल जाती है। सोचने लगेंगे लोग। यहीं आकर हमारा काम आज रुक गया है। हमको सिर्फ शान्ति-पाठ करनेवाला माना जाता है। यह नहीं माना जाता कि शान्ति के लिए हम कुछ करेंगे भी। उपद्रवकारी तो हथेली पर सर लेकर आगे आ गया है। हमारा सर कन्धे पर है। लेकिन हथेली पर आने के लिए उद्यत है, यह कल्पना हमारे विषय में हो नहीं सकती है। कहीं ऐसा न हो कि हमारी शान्तिसेनाओं के सारे समारोह पुलिस की संरक्षिता में करने हों। मैंने कहा कि अगर मैत्री हम इस देश में कायम करना चाहते हैं तो जो बहुभाषिक शहर हैं बंबई जैसे—ये नर्सरीज बन जाने चाहिए। इस प्रकार के प्रयास, इस पौधे का बीजारोपण, उसका संवर्धन यहाँ होना चाहिए। मैंने ऐसे लोग भी देखे हैं जो अपने प्यारे कुत्ते के लिए अपनी जान दे देते हैं। तो क्या ऐसे लोग भी इस देश में आगे नहीं आ सकते? मैं उनसे नहीं कह रहा हूँ जो मेरे पीढ़ी के हो गये हैं। जिनकी आयु थोड़ी बच जाती है उनको आयु से बहुत ज्यादा प्रेम हो जाता है। लेकिन जिन लोगों में आज यह उमंग है कि यह देश हमारा है, इसमें हमको जीना है, जो नौजवान हैं, उनके सामने सारा नक्शा है।

कौटुम्बिकता का विकास हो

मैंने आपके सामने रखा कि अगर द्विराष्ट्रवाद इस देश के लिए भयानक है तो बहुराष्ट्रवाद उससे अधिक भयानक है। बहुराष्ट्रवाद इस देश में नहीं पनपेगा, ऐसा संकल्प कर लेना चाहिए। बहुराष्ट्रवाद भाषा में से आया, जाति में से आया, वंश में से आया और सम्प्रदाय में से आया। इन सबका हम विरोध करेंगे। उपद्रवकारियों में वीरवृत्ति लोगों को दिखाई देती है। वह उदण्डता, अत्याचारी की वृत्ति है, वीरवृत्ति नहीं; लेकिन

www.vinoba.in

तंजौर में भूमिवानों और भूमिहीन श्रमिकों का आपसी तनाव : उसके मूल कारण

[पिछले माह श्री शंकरराव देव ने तंजौर जिले के दो मुख्य प्रखण्डों की पद-यात्रा की। पद-यात्रा के बाद उन्होंने तंजौर की भूमि और वहाँ के किसानों की समस्याओं के बारे में एक वक्तव्य प्रसारित किया। नीचे हम श्री शंकरराव देव के वक्तव्य का मुख्य अंश प्रकाशित कर रहे हैं। सं०]

तंजौर की भूमि समस्या मूलरूप में राज्य के दूसरे जिलों या अन्य राज्य जैसी ही है। लेकिन तंजौर की भूमि या खेती सम्बन्धी कुछ विशेष समस्याएँ हैं जिनका तत्काल हल निकलना निहायत जरूरी है। इन खास समस्याओं के कारण भूमिवानों और उनकी खेती में काम करनेवाले मजदूरों के आपसी सम्बन्धों में तनाव पैदा हो गया है। इस तनाव के चलते वहाँ कुछ हत्याएँ हो चुकी हैं और कुछ मासूम बच्चे और निरीह स्त्रियाँ जीवित ही जला दी गयीं। जाहिर है कि तंजौर में हमें ग्रामदान या जिलादान-अभियान के साथ-साथ इस तात्कालिक समस्या के समाधान के लिए भी काम करना है। मुख्य रूप से इसी तथा कुछ अन्य कारणों के चलते हमने पूर्वी तंजौर के नागापट्टीनम् तालुका के किलवेलर तथा तिरूवरुर प्रखण्डों में सघन पदयात्रा करने का निर्णय किया; क्योंकि इन्हीं प्रखण्डों में उपर्युक्त घटनाएँ घटी थीं।

हम यह मानते हैं कि इस देश की भूमि की कठिन समस्या का स्थायी और एकमात्र समाधान ग्रामदान ही है क्योंकि ग्रामदान गाँव के विभिन्न तबके के लोगों में अच्छे सम्बन्धों की स्थापना करके ग्राम-समुदाय का अस्तित्व कायम करता है। अतः ग्रामदान द्वारा सिर्फ भूमि की समस्या ही नहीं, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक समस्याएँ भी सुलझेंगी।

अपनी पदयात्रा के दौरान हम मुख्यरूप से ग्रामदान करने और ग्राम-समाज की

श्री शंकरराव देव

स्थापना करने पर जोर देते थे। यह कार्यक्रम जारी रखते हुए हम यह भी पता लगाने की कोशिश करते कि इस क्षेत्र के तात्कालिक झगड़े के असली कारण क्या हैं। भूमिवानों और खेतिहर मजदूरों से मिलकर हमने यह भी मालूम करने की कोशिश की कि इस समस्या का आपसी तौर पर बढ़िया समाधान किन उपायों से सम्भव होगा। भूमिवान और खेतिहर मजदूर, दोनों ने हमारी पद-यात्रा का स्वागत किया। ये लोग अच्छी संख्या में हमारी आमसभाओं में आते थे। इसके अलावा हमने उनके साथ अकेले और समूह में निजी ढंग की भी बात-चीत की। बात-चीत के दौरान झगड़े के जिन कारणों का बारबार जिक्र किया गया वे निम्नलिखित हैं—

पूरे तंजौर जिले में हरिजनों की संख्या कुल आबादी का २३% है। पूर्वी तंजौर में हरिजनों की आबादी २९% है और पश्चिमी क्षेत्र में सिर्फ १८ प्रतिशत। तंजौर जिले में हरिजन समुदाय ही मुख्य रूप से खेती में मजदूरी का काम करता है। बहुत कम हरिजनों के पास खेती की अपनी जमीन है और जो है भी वह बहुत छोटे टुकड़ों में है। हरिजनों में से अधिकांश लोगों की रहने की छोटी झोपड़ियाँ भी दूसरों की भूमि पर बनी हैं। सही अर्थ में ईसा की तरह ही प्रभु के पुत्र ये गरीब जन कह सकते हैं कि आदमी की औलाद को इस दुनिया में सुस्ताने की कहीं जगह नहीं है।

तंजौर के हरिजनों की स्थिति

हम जहाँ भी गये, हरिजन भाइयों ने हमें अपनी झोपड़ियों में रहने को आमंत्रित किया। मैंने इस निमंत्रण को उसी प्रायश्चित की भावना से स्वीकार किया जो गांधीजी चाहते थे। मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनकी हालत दर्दनाक थी। जो लोग मजदूरी सम्बन्धी विवाद के लिए हरिजनों को दोषी ठहराते हैं और मानते हैं कि वे (हरिजन) कम्युनिस्टों द्वारा गुमराह हुए हैं वे भी बिना अपवाद के यह कबूल करते हैं कि हरिजनों की बस्तियों की हालत दयनीय है। हरिजनों की झोपड़ियों में जाकर रहना मेरे लिए हमेशा एक वेदनापूर्ण अनुभव रहा है।

यह भूलने की बात नहीं है कि हरिजन और भूमिवान (जो प्रायः सवर्ण हिन्दू हैं) जब कभी एक दूसरे से मिलते हैं तो प्रायः खेतों में मिलते हैं या गाँव में किसी अन्य काम के बहाने, जो अकसर किसी-न-किसी प्रकार का शोषण का ही काम होता है। गाँव के सामुदायिक काम में बराबरी के सदस्य की हैसियत से वे बहुत कम मिलते हैं और हरिजनों की झोपड़ियों में तो कभी नहीं मिलते।

तनाव की जड़ें

इस एक कारण के साथ ही इस क्षेत्र में खेती सम्बन्धी एक खास रिवाज के प्रचलित होने के कारण इस क्षेत्र की आर्थिक समस्याएँ

लोगों को उसमें वीरवृत्ति दिखाई देती है। अगर यही सिलसिला चला तो अराजकता आयेगी। अराजकता से लाभ सिर्फ पाकिस्तान और चीन का होगा। चीन और पाकिस्तान की लॉबी आज इस दिशा में कदम बढ़ा रही है। हमको सावधान हो जाना चाहिए। इसलिए आपके शहर जैसे जितने शहर हैं, जिन शहरों में एक सम्मिलित जीवन है, जिसमें सारी भाषाओं के लोग हैं और सारे सम्प्रदायों के लोग हैं, उनके सम्मिलित तथा समन्वित जीवन का विकास होना चाहिए। इस संवादी नागरिकत्व का, जिसे मैंने कौटुम्बिकता कहा, विकास यहाँ हमको करना है।

क्या कोई बना-बनाया कार्यक्रम है? मित्रो, जीवन में कहीं बने-बनाये कार्यक्रम नहीं होते। जीवन नित्य विकासमान है। यहाँ रेडीमेड कपड़े नहीं चलते। आज के बने कपड़े दो महीनों में छोटे हो जाते हैं। निरन्तर खोज चलेगी और निरन्तर प्रयोग चलेगा। शोध और प्रयोग, जो गांधी के जीवन का रहस्य है, जो विनोबा के जीवन का रहस्य है। वह रोज शोध करता है, रोज प्रयोग करता है। इन प्रयोगों के अनुकूल पूरक और पोषक प्रयोग अन्य क्षेत्रों में हमको और आपको करने होंगे।

—बम्बई में कार्यकर्ताओं के बीच किया भाषण

www.vinoba.in

और अधिक उलझकर उत्तेजक बन रही हैं। यहाँ का काम मुख्यतः मौसमी होता है। खेतिहर मजदूर खेतो को आवश्यकता के अनुसार, जुताई, रोपाई, निराई और कटाई का काम करते हैं। खेती का मौसम आने पर इन कामों के लिए मजदूरों की इतनी जरूरत पड़ती है कि स्थानीय मजदूरों द्वारा पूरा काम अच्छी तरह नहीं हो पाता। इसलिए बाहर से मजदूरों को बुलाना ही पड़ता है। ऐसी स्थिति में जबकि एक खास मौसम में बाहर से मजदूर बुलाना पड़े, स्थानीय स्थायी मजदूरों और बाहर से आनेवाले अस्थायी मजदूरों में प्रतिद्वंद्विता की स्थिति का बनना और इसके चलते मजदूरी की दर का घटना रोका नहीं जा सकता। भूमिवानों और मजदूरों के बीच हुए दो समझौतों में इस बात का खास जिक्र किया गया है कि यदि स्थानीय मजदूरों को काम में लगने का मौका दिया गया हो तो बाहर से भी मजदूर बुलाये जा सकते हैं। समझौते में इस बात का भी निसंदेह जिक्र किया गया है कि स्थानीय मजदूरों में ऐसे लोगों को काम में लगाया जायेगा जो "अनुशासनहीन, निकम्मे और आलसी" न हों। मजदूर-संगठन का काम करने का जिन्हें अनुभव है वे इसके बहाने अनचाहे किसी भी आदमी को काम से हटा सकते हैं।

सवर्ण हिन्दुओं का उत्तरदायित्व

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि तंजोर के स्थायी मजदूर हरिजन हैं। हरिजनों में जो बुराइयाँ पायी जाती हैं और जिनके लिए वे बदनाम हैं उसके प्रति सवर्ण हिन्दुओं की कोई जिम्मेदारी नहीं है, ऐसा नहीं है। यदि हरिजनों में बुराइयाँ मौजूद हैं तो इसलिए हैं कि हजारों वर्षों से न सही, लेकिन सैकड़ों वर्षों से इन हरिजनों को समाज-बहिष्कृत होकर जीवन बिताना पड़ रहा है। वे समाज-जीवन की मूलधारा से अलग हो गये हैं। सामाजिक जीवन की मूलधारा में रहने पर ही आदमी के भीतर आदमियत के गुण विकसित होते हैं।

यद्यपि हरिजन अपने इलाके में स्थायी रूप से रहते हैं, फिर भी तंजोर के खेतिहर मजदूरों की (पन्नाइयलू) सुरक्षा के लिए सन् १९५२ में जब कानून बना तो वहाँ के अधिकांश जमीदारों ने अपने मजदूरों को काम से हटा दिया। इस प्रकार जो कानून जमीदारों से खेती के मजदूरों की रक्षा के लिए बनाया गया था उसी की आड़ में वे कार्यमुक्त कर दिये गये। इस तथ्य को स्थानीय जमीदार स्वीकार करेंगे यद्यपि कार्यमुक्त (लिक्वीडेशन) शब्द को वे बहुत सख्त मानेंगे। लेकिन मैं इस इलाके के भूमिवानों से कह सकता हूँ कि यह उन्हीं की कोई खास बात नहीं है। आजादी मिलने के बाद जहाँ भी कानूनन भूमिहीनों या खेतिहर मजदूरों के हित की रक्षा करने की कोशिश की गयी वहाँ-वहाँ कानूनी कोशिश नाकामयाब रही। लेकिन तंजौर से 'पन्नायलों' के खात्मे से एक नयी उलझन पैदा हुई। उस इलाके में मौके-मौके पर मजदूरी करनेवालों की तादाद बहुत बढ़ गयी। इसके साथ ही ऐसे मजदूरों की मजदूरी की दर भी घट गयी। तंजोर में फसल की कटनी के समय "कलावदो" के नाम से मजदूरी का एक रिवाज चलता आया है जिसके अनुसार काटी गयी फसल के १४ बोझ में से कटिया करनेवाले मजदूर को मजदूरी के रूप में डेढ़ बोझ मिलता है। कई जमीदारों ने आपसी चर्चा में हमसे कहा कि फसल-कटाई की यह पद्धति बन्द होनी चाहिए।

मन्दिरों और मठों की भूमिका

इस इलाके की खेती की काफी भूमि मन्दिरों और मठों के कब्जे में है। इस वजह से यहाँ का मसला और भी उलझ गया है। हमें बताया गया कि मन्दिरों और मठों की जमीन का इन्तजाम बहुत से बिचौलियों (मिडिलमेन) के जरिये होता है। इस विशेष परिस्थिति के कारण इस इलाके में ग्रामदान और जिलादान प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। स्वामी 'कुन्नकुडी आदि कालार' की चेष्टा के फलस्वरूप मैं इस इलाके के दो मुख्य मठों के मठाधीशों से मिला। मठाधीशों का रुख सहानुभूतिपूर्ण था लेकिन जैसा कि इस तरह के मामलों में आमतौर से होता आया है—समस्या पेश होती है कि पहले कौन हिम्मत करके अगला कदम उठाये। मुझे आशा है कि मन्दिरों के प्रबन्धक और मठाधीश इस दिशा में काफी हद तक आगे आयेंगे।

मठाधीशों से बातचीत के समय मैंने उनसे कहा कि चूँकि समस्या सामाजिक ढंग की है इसलिए इसके समाधान में आपको पहल लेनी चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो जीवन की इस दुखदायी वास्तविकता के प्रति सारा समुदाय सजग हो जायेगा और आपके नेतृत्व तथा मार्ग-दर्शन में कार्यरत होगा। मैं तमिलनाड के प्रति उसके मन्दिरों के लिए और यहाँ के लोगों के प्रति उनकी मन्दिर-संस्कृति के लिए अनुराग रखता हूँ। लेकिन इसीलिए मैं लोगों से कहता हूँ कि इस मन्दिर-संस्कृति के खर्च में सबको शरीक होना चाहिए और किसी के प्रति इसमें पक्षपात नहीं होना चाहिए। अब वह युग नहीं रहा जबकि भूमिवान मन्दिर के लिए जमीन दान देते थे और खेती करनेवाले मजदूर भगवान और उसके भक्तों के लिए अपने जीवन भर खटते थे और उनके बाद उनकी नयी पीढ़ी भी खटती जाती थी।

समस्या कैसे सुलझेगी ?

जब हम इस इलाके की सामाजिक और विशेष रूप से आर्थिक समस्या पर विचार करते हैं तब हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि यहाँ के हरिजनों की जीविका का एकमात्र जरिया खेती ही है। जब खेती का कोई काम नहीं होता तो उनके या उनकी औरतों के लिए और कोई काम नहीं रहता। इस समस्या के सुलझाने के लिए न तो रचनात्मक संगठनों द्वारा कोई रचनात्मक प्रयास किया गया और न राजनीतिक दलों द्वारा। मुझे साम्यवादियों के लिए खेद है क्योंकि वे आमतौर पर इस तरह के किसी रचनात्मक और समाज-कल्याणकारी कार्यों में विश्वास नहीं करते। शुरुआत के तौर पर यहाँ कुछ इस प्रकार के कृषि-पूरक उद्योग शुरू होने चाहिए जिसमें खेती का काम न होने पर मजदूर और विशेष रूप से उनकी स्त्रियाँ लग सकें। इससे हरिजनों का सिर्फ आर्थिक लाभ नहीं होगा बल्कि उनके जीवन को उन्नत करने की एक नयी राह खुल जायेगी।

www.vinoba.in

जैसा कि स्वाभाविक है, इस समुदाय में साम्यवादी अपनी विचार-धारा और अपनी कार्य-पद्धति के अनुसार काम कर रहे हैं। इस इलाके के तीनों विधायक साम्यवादी दल के हैं। इस वस्तुस्थिति से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ के श्रमिकों पर उनका कितना जोरदार प्रभाव है।

चूँकि साम्यवादी लोगों का श्रमिक समुदाय पर जबर्दस्त असर है, इसलिए बहुत से भूमिवान इस समस्या को राजनीतिक कहकर टाल देते हैं। वे कहते हैं कि यह आर्थिक समस्या साम्यवादियों द्वारा पैदा की गयी एक बनावटी समस्या है। स्वभावतः भूमिवान यह भूल जाते हैं कि इस समस्या का आर्थिक असर तो है ही इसके साथ ही सामाजिक असर भी है। सिर्फ समस्या को टाल देने से वह नहीं सुलझती। ऐसा करने से उसकी कीमत आपको ही चुकानी पड़ेगी। किसी समस्या को सुलझाने का मतलब है। उसे समझना एक दृष्टि से देखा जाय तो कोई समस्या शुद्ध राजनीतिक नहीं है। राजनीति का प्रभाव पूरी जिन्दगी को छूता है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि प्रत्येक राजनीतिक समस्या अन्ततोगत्वा एक सामाजिक-आर्थिक समस्या बन जाती है। यदि मौजूदा परिस्थिति से साम्यवादी लाभ उठा रहे हैं और उसको अपने उद्देश्य की पूर्ति में इस्तेमाल कर रहे हैं तो जो लोग इस समस्या को सुलझाना चाहते हैं उनके लिए यह और जरूरी हो जाता है कि वे और गहराई में जायँ और जो सच्चाई दीखे उसे कबूल करें।

इस इलाके की इन अजीब परिस्थितियों के कारण यहाँ की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं में एक जोरदार तेजी और सरगर्मी का संचार हो गया है। इस सरगर्मी को शान्त करने की प्रक्रिया को भी उतनी ही तेजी से सक्रिय करना होगा।

हरिजनों का ग्राम समुदाय में पुनर्ग्रहण

मेरी राय है कि इस समस्या को सुलझाने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। अगर हमें इस समस्या का वास्तविक और स्थायी समाधान ढूँढ़ निकालना है तो हमें इस समस्या को इस रूप में लेना है कि कैसे इलाके का पूरा हरिजन समुदाय ग्राम समुदाय के अन्दर फिर से अपना सामाजिक स्थान प्राप्त करे। इस पुनर्ग्रहण (रिक्लेमेशन) का अर्थ यह होता है कि इस समस्या को सुलझाने के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों यानी आर्थिक, सामाजिक, और इससे भी आगे बढ़कर आध्यात्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में भी एक साथ प्रयास करके इसके तरीके और साधन ढूँढ़ना है। मैं मानता हूँ कि तमिलनाडु सर्वोदय संघ और हरिजन सेवक संघ जैसी संस्थाओं को इसके लिए आगे आकर पहल करना चाहिए।

भूमिवान अपने ढंग से इस समस्या के सुलझाने में मदद दे सकते हैं। जहाँ तक 'कालावदी' जैसी अन्यायपूर्ण प्रथा का प्रश्न है, मैं आशा करता हूँ कि वह शीघ्र समाप्त कर दी जायेगी। लेकिन मजदूरी की समस्या उस समय तक बनी रहेगी जब तक समाज में भूमिवान और कृषक-मजदूर ग्रामीण समुदाय के अंगरूप में मौजूद रहेंगे।

मुझे बताया गया है कि मजदूरी सम्बन्धी विवाद के सुलझाने के लिए एक व्यक्ति के जिस आयोग की नियुक्ति सरकार द्वारा की गयी है उसका कार्यक्षेत्र सीमित रखा गया है फिर भी मैं आशा करता हूँ कि वह आयोग एक ऐसे समाधान का सुझाव पेश करेगा जो बहुत समय तक उपयोगी साबित होगा। इस समस्या पर विचार करते समय हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज हमारे देश में आमतौर से जीवन की आवश्यकताओं पर आधारित मजदूरी की माँग पेश की जा रही है। मेरी राय में इस जटिल समस्या का दीर्घकाल तक काम आनेवाला एक ही उपाय हो सकता है और वह यह है कि इसके लिए एक स्थायी-संगठन बना दिया जाय जिसे भूमिवान और श्रमिक, दोनों का विश्वास प्राप्त हो। गांधीजी ने अहमदाबाद के सूती मिल के मालिकों और मजदूरों के प्रसंग में एक ऐसा ही संगठन स्थापित किया था।

तंजौर के भूमिवानों से मेरी अपील है कि वे अपने इलाके में मजदूरों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने का वातावरण बनायें। मुझसे कई भूमिवान कह चुके हैं कि वे दिल से ऐसा चाहते हैं। अब उनकी ओर से पहल शुरू होनी चाहिए। इसकी शुरुआत के लिए वे कम-से-कम इतना तो करें ही कि हरिजनों ने भूमि के जितने टुकड़े पर अपनी झोपड़ी बना ली है उतने पर उनकी मालिकी मान लें। वैसे यह एक मामूली-सी बात होगी लेकिन आज के वातावरण में यह एक बड़ी चीज हो जायेगी। मुझे आशा है कि अच्छाई की विजय होगी ही।

(मूल अंग्रेजी से)

उड़ीसा का पहला जिलादान : कोरापुट

महीनों के कठिन परिश्रम के बाद कोरापुट जिलादान का संकल्प पूरा हुआ और १७ अप्रैल, १९६९ की शाम को जैपुर (कोरापुट) में जिलादान का समर्पण-समारोह प्रसिद्ध गांधीवादी नेता श्री शंकररावजी देव की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ। समारोह के पहले लगभग ४०० शान्तिसैनिकों का जुलूस जैपुर शहर की परिक्रमा करता हुआ सभा-स्थल पर गया। जिले के ६ अनुमण्डल और ४२ विकास-खण्डों का दान श्री वृन्दावन जेना ने अध्यक्ष को समर्पित किया। विनोबाजी की कल्पना कोरापुट में आज साकार हुई। उनकी १९५५ की उड़ीसा-पदयात्रा में प्रवाहित होनेवाली "ग्रामदान गंगा" आज जिलादान तक आ गयी है और आगे वह ग्राम-स्वराज्य का रूप धारण करने जा रही है।

इस अवसर पर सर्व सेवा संघ के तत्कालीन अध्यक्ष श्री मनमोहन चौधरी ने जिलादान का स्वागत करते हुए कहा कि आज बड़े आनन्द का दिन है। सारे भारत में १७ जिलादान हो चुके हैं और आज कोरापुट १८वाँ जिलादान की शृंखला में जुड़ गया है। उन्होंने आज के राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय संदर्भ में जिलादान के विशिष्ट महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

१९५५ में अपनी कोरापुट यात्रा के समय

www.vinoba.in

विनोबाजी ने कहा था : "हम सोचते थे कि इतना औदार्य इन ग्रामीणों को किसने सिखाया ? हमको यही उत्तर मिला कि ये पहाड़ों की सन्निधि में रहते हैं, जहाँ से नदियाँ बहती हैं, इसलिए इनके हृदय भी ऐसे ही प्रवाहित, उन्नत और उदार बनते हैं।" इसलिए इन पहाड़ों के बीच रहनेवाले सरल आदिवासियों ने ग्रामदान के विचार को बहुत आसानी से ग्रहण कर लिया।

कोरापुट आंध्र प्रदेश की सीमा से लगा हुआ उड़ीसा का सबसे बड़ा जिला है। यहाँ जंगलों, पहाड़ों की अधिकता है। पर प्रकृति की यह मनोरम सुषुमा आर्थिक दृष्टि से लाभकर नहीं है। सिंचाई के लिए न नहरें हैं और न कुएँ। यह आदिवासी तथा पिछड़ा हुआ जिला है। यहाँ के आदिवासी सरल-सहज स्वभाव के हैं। उनकी भाषा न तो उड़िया है न तेलुगु। उनकी अपनी स्वतंत्र भाषा है। यहाँ दरिद्रता का नग्न रूप, रोग, बीमारियों का प्रधान क्षेत्र, शिक्षा का सर्वथा अभाव तथा सभ्य जगत से सर्वथा पृथक भाग देखने को मिलता है। पर अत्यन्त पिछड़े हुए इस जिले ने ग्रामदान के विचार को बहुत पहले ही अपना लिया था।

कोरापुट भू-क्रान्ति का तीर्थ-क्षेत्र माना जाता है। भूदान-ग्रामदान की क्रान्ति में यह जिला सारे देश में अग्रणी रहा। अक्तूबर १९५५ में कोरापुट की अपनी पदयात्रा पूरी करके जब विनोबाजी आंध्र प्रदेश जा रहे थे तब तक जिले में कुल ६०५ ग्रामदान हो चुके थे, और १ ६५, २६८ एकड़ भूमि दान में मिल चुकी थी।

देश की आजादी के पूर्व भी यहाँ की जनता सदा जागरूक रही है। कोरापुट की इस भूमि ने स्वतंत्रता-संग्राम में कई सेनानी दिये हैं। उनमें से १९४२ की क्रान्ति के अमर शहीद श्री लक्ष्मण नायक का नाम आज भी कोरापुट का बच्चा-बच्चा याद करता है।

जिलादान की व्यूह-रचना

गत साल उड़ीसा सर्वोदय मंडल ने २ अक्तूबर, १९६९ तक प्रान्तदान पूरा करने का संकल्प लिया। उस सन्दर्भ में कोरापुट में जिलादान का अभियान साथियों ने तीव्र गति से चलाने का निश्चय किया। अभियान में उत्कल सर्वोदय मण्डल, उत्कल खादी-मण्डल, उत्कल नवजीवन मण्डल, कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट, नारायण पाटना क्षेत्र समिति, ग्रामदान संघ तथा जिले की अन्य रचनात्मक संस्थाओं के लगभग ११० भाई-बहनों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके अलावा ग्रामदानी गाँवों के लोगों ने भी प्राप्ति के काम में हिस्सा लिया, जिनकी संख्या बहुत अधिक थी। जिलादान के इस अभियान का नेतृत्व कोरापुट जिले के बेताज के बादशाह, त्याग, सेवा तथा नम्रता की मूर्ति श्री विश्वनाथ पटनायक गत फरवरी मास से कर रहे थे। फरवरी के पहले ४३ प्रखण्डों में से सिर्फ २२ प्रखण्डदान पूरे हुए थे।

अभियान को चलाने के लिए आर्थिक कठिनाई साथियों के सामने खड़ी थी। पर मंजिल तक पहुँचने में वह बाधक नहीं हुई। जैसा कि विनोबाजी अकसर कहा करते हैं, पैसा न होना ही अपने आप में बहुत बड़ी शक्ति है। अभियान के काम में वेग लाने के लिए नारायण पाटना क्षेत्र समिति ने १२०० रुपये, राज्य गांधी शताब्दी समिति ने ४०० रु० तथा जिले के ग्रामदान संघों ने पचास-पचास रुपये (जिले में कुल १५ ग्रामदान संघ हैं) तुरन्त देने का निर्णय लिया। इसके अलावा स्थानिक मदद से जिलादान संकल्प की पूर्ति हुई। बचे हुए २० प्रखण्ड पूरा करने में लगभग ५००० रु० खर्च हुए। कोरापुट जिले के मूक कार्यकर्ता इस विचार के वाहक रहे। इसमें मुख्यतः सर्वश्री महम्मद बाजी, रतनदास, वृन्दावन जेना, रामचन्द्र जेना, श्यामबाबू, निशाकर दास, अनादि भाई, शान्ति बहन, तथा मालती विश्वाल आदि हैं।

जिलादान समर्पण-समारोह में अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री शंकररावजी ने जिले की जनता, रचनात्मक संस्थाओं तथा कार्यकर्ताओं का जिलादान के लिए अभिनन्दन किया। उन्होंने कहा कि सबसे पहले बड़े पैमाने पर ग्रामदान यहाँ विनोबाजी की सन् ५५ की पदयात्रा में हुए थे और उसके कारण विनोबाजी की श्रद्धा ग्रामदान में बढ़ी थी। उन्होंने कहा कि गांधीजी के स्वप्नों का स्वराज्य अभी हिन्दुस्तान की जनता को नहीं मिला है। देश के मुट्ठी भर लोगों के लिए स्वराज्य मिला है। आज की सारी व्यवस्था ऐसी है कि सिर नीचे और पैर ऊपर है। सारा समाज सिर के बल चल रहा है। ग्रामस्वराज्य की स्थापना के लिए प्रखण्डदान, जिलादान, राज्यदान के विचार को अपनाने की अपील उन्होंने उड़ीसावासियों से की और इसके लिए अपनी मंगल-कामना प्रकट की।

अन्त में श्री श्यामबाबू ने बाहर से आये हुए अतिथियों, ग्रामीणों तथा नागरिकों का आभार मानते हुए कहा कि आप लोगों के आशीर्वाद तथा सहकार, सहयोग से जिलादान की मंजिल तक पहुँचने में हम सब सफल हुए।

—गायत्री प्रसाद शर्मा

कोरापुट जिलादान के आँकड़े

अनुमण्डल का नाम	प्रखण्ड संख्या	कुल गाँव संख्या	चिरागी गाँव	कुल ग्रामदान संख्या	कुल आबादी	ग्रामदान में शामिल आबादी	ग्रामदान में शामिल आबादी का प्रतिशत	ग्रामदान में प्राप्त जमीन (एकड़ में)
कोरापुट	९	१६०५	१३५७	१३४०	२,८५,०४३	२,३६,८५४	७९·७%	२,३१,८०६–७०
जैपुर	५	७५८	६६८	४५९	२,६३,५२२	२,०३,२२७	७७·७%	९८,९५७–३९
नवरंगपुर	१०	१०७४	८३०	७८४	३,८०,८१६	३,३१,७६२	८७·१%	१,९८,५८७–४६
मालकानगिरी	७	६५५	५८२	४९१	१,३९,२३०	१,०६,२७८	९०%	१,०३,४९६–२९
रायगडा	४	१५६०	११०३	१०४३	१,६०,०६५	१,२६,४५२	८०·४%	१,२५,१३५–९५
गुणुपुर	७	१५५५	१२७२	८४८	१,९२,६५४	१,५४,९७६	८२%	९५८९०–९०
कुल योग :	४२	७२०७	५८१०	४९९५	१४,२१३७०	११,४२,१४९	८०%	८,३३,८५४–७९

www.vinoba.in

ग्रामदान-अभियान के अनुभव तथा आगामी व्यूह-रचना

ग्रामदान-आन्दोलन में जहाँ हम पहुँचे हैं, वहाँ से देखने पर कुछ चीजें हमारे ध्यान में आती हैं। एक ओर जहाँ समस्याएँ हैं, वहाँ दूसरी ओर हमारी मर्यादाएँ अथवा कमियाँ भी हैं। जहाँ तक सफलताओं का सम्बन्ध आता है, आज हम ग्रामदान से शुरू करके प्रखण्डदान, प्रखण्डदान से जिलादान और उसके आगे प्रदेशदान के नजदीक पहुँच रहे हैं। आन्दोलन ने जिलादान की शृङ्खला से क्रान्ति के आरोहण की एक के बाद एक जो मंजिलें तय की हैं, वे असाधारण महत्त्व की हैं। एक लाख के करीब ग्रामदान तक हम पहुँच चुके हैं। १६ जिलों का दान हो चुका है। प्रदेशदान का संकल्प सात प्रदेशों ने किया है और उसे पूर्ण करने के लिए तत्परता से काम शुरू भी हो गया है। अब ऐसा लगने लगा है कि जैसे हमारे सामने पूरे ग्रामदानी राज्य के विकास और व्यवस्था का प्रश्न खड़ा हुआ है। यद्यपि अभी तक किसी प्रदेश का दान नहीं हुआ है, लेकिन इस वर्ष में ऐसी सम्भावना है कि एक से अधिक प्रदेश का दान हो जायगा। आज ग्रामदान-आन्दोलन भावना से सम्भावना की मंजिल तक पहुँच चुका है।

प्रदेशदान के संकल्प की ओर बढ़ने में रचनात्मक कार्यकर्ताओं की सहायता पहले की अपेक्षा हमें ज्यादा मिलने लगी है। आन्दोलन में खादी-कार्यकर्ताओं की संख्या भी कई गुनी बढ़ी है। रचनात्मक संस्थाओं ने आर्थिक सहायता बहुत बड़ी मात्रा में दी है। आन्दोलन के लक्ष्य की पूर्ति को उन्होंने अपनी संस्थाओं का लक्ष्य माना है। उनके अनुभवी नेताओं का सहयोग भी स्वाभाविक ही ज्यादा मिला है।

जिलादान प्राप्त करने में विभिन्न प्रदेशों में नयी पद्धतियों का विकास हुआ है—

१. सैकड़ों ग्रामदानी गाँवों के नागरिक अभियान में शामिल हुए। उन्हें मान-धन इत्यादि नहीं देना पड़ा। इन नागरिकों के साथ ग्रामीण जीवन के नेता भी अभियान में शामिल हुए।

२. ग्रामीण क्षेत्रों के शिक्षित नवयुवकों की सहायता अपने में एक नयी उपलब्धि है, क्योंकि यही लोग आगे जाकर ग्रामीण जीवन की पुनर्रचना में बहुत बड़ी जिम्मेदारी का काम करनेवाले हैं। उनका क्रान्तिप्रवण होना आगे की रचना को भी क्रान्ति की दिशा मिलने का संकेत है। हर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में इस प्रकार के शिक्षित नवयुवक मौजूद हैं और उनकी सहायता प्राप्त होने की सम्भावना है।

३. शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की सहायता बड़े पैमाने पर मिलने लगी है।

४. शासन के कर्मचारियों की सहायता विशेष परिस्थिति में कहीं-कहीं प्राप्त हुई है।

५. राजनीतिक दलों के ग्रामीण क्षेत्रों में काम करनेवाले लोगों की सहायता भी हमें मिली है।

६. कहीं-कहीं एक नयी व्यूह-रचना का भी दर्शन हुआ है। एक सघन क्षेत्र लेकर अच्छी पूर्व तैयारी करने के बाद पूरी शक्ति से योजनाबद्ध काम करने में अभियान आगे बढ़ता है, यह दर्शन हमें हुआ। इससे कार्यकर्ताओं का आत्म-विश्वास बढ़ा है।

केवल अविरोध के वातावरण की जगह कहीं-कहीं अधिक सक्रिय सहानुभूति हमें प्राप्त हुई है। वर्तमान घुटन की स्थिति के विकल्प के रूप में ग्रामदान सबकी आशा और आकांक्षा का केन्द्र बना है। जनता में ग्रामदान को एक सम्भाव्य विकल्प के रूप में समझने की उत्कटता पैदा हुई है अथवा अपेक्षाएँ पैदा हुई हैं। अपेक्षाएँ दो प्रकार की हैं :

१. जन-मानस में

२. आन्दोलन के भीतर—हमारे अपने बीच।

नये पर्याय के कारण जन-मानस आन्दोलन की ओर देखने लगा है। जन-मानस में आन्दोलन के प्रति जो अपेक्षा है उसका स्वरूप लोगों ने पूछना शुरू किया है। उसका प्रभाव क्या है? किसी क्षेत्र-विशेष में आज के सामाजिक जीवन में सुधार हुआ है—आर्थिक क्षेत्रों की बुराइयाँ कम हुई हैं? इत्यादि इस प्रकार के कई प्रश्न पूछे जाने लगे हैं और स्वाभाविक ही इस ओर उनकी आकांक्षाएँ जागृत हुई हैं। राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में ग्रामदान के स्वरूप का अब दर्शन होना चाहिए। समाज में आज जो जन-जीवन को छूनेवाली तात्कालिक समस्याएँ उपस्थित होती हैं, सर्वोदय-कार्यकर्ताओं के लिए उनके मन में आशा और अपेक्षाएँ हैं।

हमारे अपने बीच ग्रामदान की चार शर्तों की पूर्ति होगी या नहीं? कब होगी? क्या नागरिक जीवन पर ग्रामदान की सफलता का असर दीख रहा है—पड़ रहा है? कार्यकर्ताओं की संख्या बावजूद इन सफलताओं के क्यों नहीं बढ़ रही है? यानी अब आन्दोलन को लोक-आन्दोलन का रूप लेना चाहिए, यह अपेक्षा स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हुई है। हमारी संगठन-शक्ति प्रकट नहीं हुई है। जनसंख्या के आधे भाग अर्थात् स्त्रियों तक हम पहुँच नहीं पा रहे हैं।

इन अपेक्षाओं की पूर्ति करने की दिशा में स्वाभाविक ही हमारा ध्यान जाता है :

१. वातावरण जितना हमारे लिए अनुकूल चाहिए, वैसा नहीं बना सके। वातावरण से मतलब है उस प्रदेश के समग्र जीवन में और विशेषतः कर्म-प्रवण जीवन में ग्रामदान का विचार सम्मत हो। सम्मति का अगला चरण ग्रामदान के लिए प्रत्यक्ष कार्य में प्रकट होना चाहिए। साहित्यिक, शैक्षणिक तथा समाचार-पत्रीय जीवन की हलचलों से अक्सर जीवन बनता है। हमारा विचार वहाँ पूर्णरूपेण स्वीकृत नहीं हुआ है। इसलिए वातावरण बनानेवाले वर्गों पर शिक्षित, प्रतिष्ठित, समाज-जीवन की बागडोर सँभालनेवालों के सोचने पर हमारा गहरा असर पड़े, ऐसी कार्यवाही हमें करनी चाहिए। इसलिए वातावरण बनाने का हमारा मुख्य कार्यक्रम होना चाहिए।

२. अभी तक सब प्रदेशों में पर्याप्त संख्या में कार्यकर्ता हमारे बीच नहीं हैं। कार्यकर्ताओं के शिक्षण का क्रान्ति-आन्दोलन चलाने लायक व्यक्तित्व बन सके, इसके

www.vinoba.in

लिए कोई व्यवस्था हमें अभी करनी होगी। यह तो त्रिकोणात्मक क्रान्ति है, इसलिए कार्यकर्ता सजग और व्यक्तित्व-वाले चाहिए।

३. अभी यह चित्र नहीं बना है कि आन्दोलन आज की समस्या को हल करने में सामने आया है। आन्दोलन के संयोजन का भी तंत्र हमें नये ढंग से विकसित करना है। हर उथल-पुथल के साथ भावना, विचार तथा कृति के प्रवाह समाज में उठते हैं, वे ध्यान में लेकर आन्दोलन का संचालन किस ढंग से करें?

४. पूरे साधन हम अभी जुटा नहीं पाये हैं। पर्याप्त आर्थिक व्यवस्था जुटाना बाकी है।

जहां उक्त बातों का अभाव बहुत ही अधिक है, उन प्रदेशों में हमारा आन्दोलन बहुत कमजोर है। ऐसे प्रदेशों में आन्दोलन गति पकड़े, इसके लिए हम क्या कर सकते हैं, यह सवाल हमारे सामने है।

कोई ऐसी व्यूह-रचना हमें ढूंढनी है, जिससे नियोजित समय में यानी गांधी-शताब्दी की अवधि में प्रदेशदान के संकल्प पूरे हो सकें, उसके लिए :

१. प्रदेश की पूरी शक्ति किसी छोटे सघन क्षेत्र में लगायी जाय। वह क्षेत्र पूरा होने के बाद दूसरा क्षेत्र हाथ में लिया जाय।

२. या एक पूरे क्षेत्र में काम करें।

३. एक से अधिक प्रदेश एक साथ इकट्ठा आकर एक प्रदेश को पूरा करने का प्रयास करें और उसको पूरा करने पर दूसरे प्रदेश में चले जायें।

४. इसको अमल में लाने के लिए अन्तर-प्रान्तीय मार्गदर्शन की व्यवस्था करें। एक टोली बने, जो इस तरह के अन्तर-प्रान्तीय काम को चालना देने का काम करे। वह टोली आर्थिक सहायता प्राप्त करने, वातावरण बनाने, कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ाने तथा शिविर का मार्ग-दर्शन कर सकने में क्षमतावाली हो।

भविष्य के काम की व्यूह-रचना करते हुए ग्रामदानोत्तर काम की तरफ क्या हम पूरा ध्यान न दें? शायद यह खतरे से खाली नहीं होगा। ग्रामदान कानून विभिन्न प्रदेशों में बने हैं। उनके अन्तर्गत तेज रफ्तार से पुष्टि होनी चाहिए। उसके लिए कोई अलग तंत्र (मशीनरी) खड़ा करना होगा या केवल शासकीय तंत्र से यह होगा? कानून के अन्तर्गत पुष्टि तथा तत्सम्बन्धी काम सरल और सुगमता से हो सके, इसके लिए कानून में आवश्यक सुधार-संशोधन भी करने होंगे। ग्रामदान की शर्तों के अनुसार वास्तविक पुष्टि यानी ग्रामसभा का विधिवत् गठन और भूमिहीनों के लिए जमीन का वितरण आदि कामों की तरफ भी हमें ध्यान देना होगा।

हमारे लक्ष्य की ओर बढ़ने में जिन वर्गों अथवा निहित स्वार्थ का विरोध है, उसे हटाने या उनके निराकरण का कोई इलाज अथवा तरीका हमारे पास है? और है तो क्या है? लोक-प्रतिनिधि, बुद्धिजीवी, पुस्तकें, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, और लेखकों के साथ आन्दोलन के विचार का गहरा सम्बन्ध जोड़ना चाहिए और हमारे विचार के लिए उनकी मान्यताएँ प्राप्त करनी चाहिए, क्योंकि जनमानस बनाने में इनका बहुत बड़ा हाथ होता है।

(तिरुपति अधिवेशन में प्रस्तुत सन्दर्भ लेख – १)

सर्व सेवा संघ अधिवेशन–१

सर्व सम्मति की अनोखी मिसाल

जे० पी० ने तिरुपति में २३, २४, २५ अप्रैल '६९ को आयोजित सर्व सेवा संघ के अधिवेशन के सम्बन्ध में जो बात कही, अगर वही बात सबके मन में होती तो शायद संघ अधिवेशन पूर्ण सफल माना जाता। उन्होंने अपने आखिरी भाषण में कहा था कि यह अधिवेशन तो सिर्फ सर्व सेवा संघ की संगठन सम्बन्धी औपचारिक आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए आयोजित किया गया था। लेकिन अधिवेशन में भाग लेने आनेवाले हर साथी के मन में यह बात रही हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता, यद्यपि ऐसे लोगों की संख्या भी कुछ अधिक नहीं थी, जो मन में कुछ आशा लेकर गये हों। इस अधिवेशन में तो ऐसा लगा कि बाबा सूक्ष्म, सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम की ओर हैं और हम लोग आन्दोलन से तटस्थ, तटस्थतर, तटस्थतम की ओर हैं। इसलिए जे० पी० की बात मन को सांत्वना देनेवाली साबित हुई।

२३ अप्रैल की शाम को चार बजे अधिवेशन का कार्यक्रम शुरू हुआ। स्वागत् समिति के मंत्री श्री तिम्मा रेड्डी के औपचारिक भाषण और दिवंगत साथियों को मौन श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद आवूरोड अधिवेशन की कार्यवाही स्वीकृति के लिए पेश की गयी और स्वीकृत हुई।

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष मनमोहन चौधरी ने अपने महत्त्वपूर्ण विदाई भाषण में आन्दोलन की समीक्षा पेश करते हुए अपने कार्यकाल में प्राप्त साथियों के सक्रिय सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया तथा नये अध्यक्ष और मंत्री के लिए शुभकामना व्यक्त की। (पूरा भाषण २८ अप्रैल के अंक में प्रकाशित हो चुका है)

आंध्र के राज्यपाल श्री खण्डुभाई देसाई ने श्री मनमोहन भाई के अध्यक्षीय भाषण के बाद अपने आशीर्वचन में कहा, "बिना किसी प्रकार की हिचकिचाहट के मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं आपके इस परिवार का एक सदस्य हूँ।" आपने कहा, "गांधीजी अब भी सर्व सेवा संघ के माध्यम से बोल रहे हैं।" श्री खण्डुभाई की इस बात ने हमारे आत्म-गौरव की अनुभूति को बढ़ाया, लेकिन उसके साथ ही यह संकेत भी दिया कि सर्व सेवा संघ से अपेक्षाएँ कितनी और कैसी हैं।

इसके बाद शुरू हुआ अध्यक्ष के चुनाव का कार्यक्रम, जो इस अधिवेशन का मुख्य कार्यक्रम था। संघ की भावना और उसके विधान के अनुसार अध्यक्ष का चुनाव सर्व सम्मति या सर्वानुमति से होना चाहिए, लेकिन अभी तक इसकी कोई स्पष्ट पद्धति नहीं निकल पायी है, इसलिए तय हुआ कि नाम प्रस्तावित कर दिये जायँ, और २० मिनट के लिए सभा स्थगित कर दी जाय, लोग टोलियों में बँटकर सर्व सम्मति या सर्वानुमति की पद्धति पर चर्चा करें और

www.vinoba.in

सुझाव पेश करें। अध्यक्ष के लिए १४ नामों का प्रस्ताव आया, जिसकी घोषणा के बाद २० मिनट के लिए सभा स्थगित हुई।

अपेक्षा से भी अधिक सहूलियत से २० मिनट के अन्दर सर्वसम्मति से अध्यक्ष का चुनाव हो गया, यह इस अधिवेशन की और सर्व सेवा संघ की एकता की सबसे बड़ी मिसाल मानी जायगी। इस युग में, जबकि हर राजनैतिक दल में, यहाँ तक कि धर्म और अध्यात्म के नाम में चलने वाले संगठनों में भी, नेतृत्व के प्रश्न पर कितनी खींचतान होती रहती है, सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष का एक राय से चुनाव हो जाना बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात तो है ही, साथ ही सर्वसम्मति या सर्वानुमति की नीति पर शंका करनेवालों के लिए एक जवाब भी है।

एक ओर यह बात है, दूसरी ओर ध्यान देने लायक एक महत्त्व की चीज यह भी है कि किस प्रकार सर्व सेवा संघ इस आन्दोलन में लगे सामान्य कार्यकर्ताओं के सामूहिक निर्णय का सक्रिय मंच बने। सर्वसम्मति या सर्वानुमति की पद्धति ढूँढ़ने के लिए २० मिनट तक सभा स्थगित रही, और लोग टोलियों में बिखर कर चर्चाएँ करते रहे। लेकिन यह लिखते हुए कुछ दुख होता है कि बिखरने और टोलियों में चर्चा करने का दृश्य सभा-स्थल पर दिखाई तो दिया, लेकिन चर्चा का विषय वह नहीं था, जिसके लिए लोग बिखरे थे। सर्व सेवा संघ के कुछ प्रमुख लोगों और प्रस्तावित अध्यक्षों की एक गोष्ठी मंच के निकट चर्चा में सक्रिय थी, और आखिर के दो नामों—श्री एस० जगन्नाथन् और आचार्य राममूर्ति—में से श्री एस० जगन्नाथन् के नाम पर सब की एक राय हुई। अनिच्छा और इनकार के बाद भी श्री जगन्नाथनजी को पंचों की राय माननी पड़ी; और उनके जैसे 'डायनेमिक' व्यक्तित्व का नेतृत्व हमें प्राप्त हुआ। लेकिन उनका क्या, जिनकी चर्चा और चिन्तन का विषय न तो सर्वसम्मति या सर्वानुमति था, और न इस विषय पर उनकी कोई राय ही व्यक्त हुई? विवाद और टकराव को न आने देना या आने पर उसे समझदारी के साथ निपटा लेना एक बात है, और सक्रिय उदासीनता या 'कोई नृप होय हमें क्या हानी' वाली मनोवृत्ति बिलकुल दूसरी। पहली में शक्ति और सक्रियता का इजहार है तो दूसरी में शक्तिहीनता और निष्क्रियता का। क्या इस तरह सर्व सेवा संघ में देश की अपेक्षाएँ पूरी करने की सामर्थ्य जुटाई जा सकेगी?

दूसरे दिन आठ बजे अधिवेशन का कार्यक्रम नये अध्यक्ष के अभिनन्दन के साथ शुरू हुआ। पुराने अध्यक्ष ने नये अध्यक्ष को जिम्मेदारी सौंपते हुए प्रतीक स्वरूप सूत की गुण्डी पहनायी। लोकसेवकों की ओर से पंजाब के श्री बिलगाजी ने पुराने को विदाई दी और नये अध्यक्ष का स्वागत किया। परम्परा के अनुसार दादा धर्माधिकारी ने नये अध्यक्ष का परिचय कराते हुए कहा, "सर्वसम्मति (यूनैनिमिटी) और समझदारी (सैनिटी) साथ-साथ चल सकती है, इस विषय में मुझे संदेह था, लेकिन कल के निर्णय से यह जाहिर हो गया कि सर्वसम्मति और समझदारी साथ-साथ चल सकती है। यह ऐतिहासिक महत्त्व की चीज है, और इससे आगे की प्रेरणा और शक्ति मिलेगी।" दादा ने श्री जगन्नाथन् के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व की ओर संकेत करते हुए कहा, रामायण में जटायु ने असफलता का प्रयास किया। जीवन में असफलता हो, पराजय नहीं। जटायु ने असफलता स्वीकार की, लेकिन पराजित नहीं हुआ, इससे हनुमान का मार्ग प्रशस्त हुआ। क्रान्ति के सहगामी होकर दक्षिण में जहाँ हम मानते थे कि अलगाव की भावना पैदा हो रही है, वहाँ असफल प्रयास ही नहीं, निरन्तर प्रयास हुआ। जगन्नाथनजी के जीवन में अबतक जो संकेत दीखे हैं उनसे मन बहुत आश्वस्त है। मैं उनका स्वागत करता हूँ।" पुराने अध्यक्ष मंत्री को इस अवसर पर धन्यवाद देते हुए दादा ने कहा, "सज्जनता के साथ बुद्धिमानी और कार्य क्षमता भी चल सकती है, इसकी मिसाल रहे हैं मनमोहन और राधा कृष्ण! सर्व सेवा संघ ने पठानकोट के अधिवेशन में तरुणाई में अपना विश्वास प्रगट किया, और यह प्रसन्नता की बात है कि उस विश्वास को इनकी चतुराई ने पुष्ट किया।'

दादा के बाद श्री जगन्नाथनजी ने कहा, "मैं एक सामान्य कार्यकर्ता हूँ, और इस जिम्मेदारी के योग्य नहीं। अब सबके सक्रिय सहयोग से ही गतिशीलता और एकता कायम रहेगी। जनता की हमसे अपेक्षाएँ हैं, हमें आशा है कि सर्व सेवा संघ अपनी 'कामरेडशिप' की शक्ति से उन अपेक्षाओं को पूरी करने में सक्षम साबित होगा।"

इन औपचारिक कार्यवाहियों के बाद श्री गोविन्दराव देशपाण्डे ने आन्दोलन और अभियान विषयक चर्चा की शुरुआत की। आपने आन्दोलन के सम्बन्ध में व्यक्त दो प्रकार की रायों का जिक्र करते हुए कहा कि "जो मध्यधारा में हैं, उनकी राय से किनारे वालों की राय भिन्न है। किनारेवालों को बहुत-सी शंकाएँ होती हैं, जो सहज हैं, लेकिन मध्यवालों को भरोसा है कि इस क्रान्ति के लिए जितनी एकता आवश्यक है, उतनी इसमें है।" आपने आन्दोलन की सफलताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि "अविरोध की स्थिति बनी है और उपेक्षा की मनोवृत्ति घटी है। जितना प्रयास हुआ है, उस अनुपात में उसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है, जिस क्षेत्र में प्रयास ही नहीं हुआ वहाँ प्रभाव क्या दिखाई देगा? देश में हमसे अपेक्षाएँ बढ़ी हैं, कहीं कुछ होता है, तो लोग पूछते हैं कि आप लोग चुप क्यों हैं, कुछ करते क्यों नहीं?" आन्दोलन की कठिनाइयों का जिक्र करते हुए आपने कार्यकर्ता-शक्ति के अभाव का जिक्र किया और व्यापक आन्दोलन के लिए जन के द्वारा जन के हित का आन्दोलन चले, इस बात को महत्ता की ओर ध्यान आकर्षित किया। आपने आन्दोलन में जल्दीबाजी वृत्ति को जहर बताते हुए सतर्क रहने की सलाह दी और अन्त में 'बारडोली-फार्मूले' से काम करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इसके बाद अधिवेशन में भाग लेनेवालों को आमंत्रित किया गया, चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए, लेकिन कोई सामने नहीं आया। आखिर मंच खाली न रहे, इस दृष्टि से प्रदेशीय कार्यों की जानकारी प्रस्तुत करने का सिलसिला चालू किया गया। गोराजी ने तेलंगाना की अपनी यात्रा और 'फूल के पौदे हटाओ, सब्जी उगाओ' आन्दोलन की जानकारी दी। उड़ीसा के अनादि नायक ने कोरा-

www.vinoba.in

पुट के जिलादान की घोषणा की। पंजाब, हरियाणा, और हिमांचल प्रदेश की जानकारी दी यशपाल मित्तल ने। गुजरात के डा० द्वारकादास जोशी ने गुजरात में ग्रामदान अपेक्षित गति से आगे नहीं बढ़ पा रहा है, इस पर चिंता व्यक्त की। कैथान् और नटराजन् ने दक्षिण के आन्दोलन की जानकारी दी। नटराजन् ने तंजौर के कम्युनिस्ट-प्रभावित क्षेत्र में शंकरराव देव की हाल की पदयात्रा के उल्लेखनीय प्रभावों का जिक्र किया। बिहार के निर्मलचन्द्र ने कहा कि सरकारी पुष्टि का काम बिलकुल बन्द कर देना चाहिए और हमें अपने ढंग से संगठन खड़ा करने की ओर ध्यान देना चाहिए।

जानकारी प्रस्तुत करने का यह सिलसिला दोपहर को ही समाप्त हो जाना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हो सका और दोपहर के बाद मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश की जानकारियाँ पेश की गयीं।

इस चर्चा का समारोप करते हुए निर्मला बहन ने कहा कि, "हमने बहुत महत्त्व की मंजिल पूरी की है, लेकिन लक्ष्य बहुत बड़ा है, इसलिए उपलब्धियों की महत्ता का प्रत्यय हमें नहीं हो रहा है। अब आगे की व्यूह-रचना हमें सतर्क होकर करनी है। इसके तीन क्षेत्र है--(१) बिहार, (२) संकल्पित प्रदेश, (३) अन्य प्रदेश।

निर्मला बहन द्वारा प्रस्तुत कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दे निम्न प्रकार हैं :

(१) ३१ मई तक बिहारदान के संकल्प को पूरा करने में सारी शक्ति लगायें।

(२) संकल्पित प्रदेशों के कार्यकर्ताओं का आपस में सहयोगी आदान-प्रदान हो।

(३) नगरों के शिक्षितों, बुद्धिजीवियों को आन्दोलन की ओर आकर्षित किया जाय, उन्हें शामिल करने की चेष्टा हो।

(४) आन्दोलन की आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने का निरन्तर प्रयास हो।

(५) हमारा आपस में भाईचारा और अधिक विकसित हो।

(६) साहित्य के व्यापक प्रसार की योजना बने।

(७) आन्दोलन के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम जोड़े जायँ।

(८) हमारे कार्यों में आध्यात्मिक वृत्ति रहे।

(९) कार्यकर्ताओं के लिए हृदय में स्नेह भाव विकसित करें।

(१०) पत्रिकाओं की ओर से जहाँ-जहाँ अच्छे काम हो रहे हैं, उनकी जानकारी प्रस्तुत करने का काम मधुसंचय-वृत्ति से हो।

(११) हम अधिक से अधिक जनता के बीच रहें।

—रामचन्द्र राही

उत्तरप्रदेश की सरकार लोकमत का समादर करे

—पुलिस के संरक्षण में शराब की दुकानें चलाना अनुचित—

उत्तराखण्ड की शराब बन्दी व आन्दोलन पर सर्व सेवा संघ का प्रस्ताव

उत्तरप्रदेश के कोटद्वार, लैण्डसुडाउन और सतपुली नगरों में पुन: शराब की दुकानों को चालू करने के सम्बन्ध में वहाँ की जनता और प्रदेशीय सरकार के बीच पैदा हुई वर्तमान टकराव की घटनाओं से सर्व सेवा संघ पूरी तरह अवगत हुआ। ऐसा मालूम पड़ता है कि वहाँ के निवासियों ने शराब की दुकानों के समक्ष शान्तिपूर्ण धरना देने का एक अभियान शुरू कर दिया है, और महिलाओं ने उसमें उत्साह के साथ योगदान दिया है। वहाँ की नगरपालिका ने अपनी सीमा में शराब की दुकान न खोलने का प्रस्ताव किया है, जब कि उत्तरप्रदेश की सरकार नगरपालिका के क्षेत्र में शराब की दुकानें खोलने पर दृढ़ है। शराब की दुकानें खोलने में उत्तरप्रदेश की सरकार ने सशस्त्र पुलिस का सहारा लिया है, और शराब खरीदने और पीने के लिए उसके माध्यम से वह जोरदार प्रचार करा रही है।

सर्व सेवा संघ उन परिस्थितियों से अवगत है, जिनके कारण डा० सुशीला नायर को आमरण उपवास शुरू करना पड़ा और जो आठवें दिन समाप्त हुआ। यह स्पष्ट है कि स्थानीय जनता की इच्छाओं के विरुद्ध जिसे उसने अपने लोकप्रिय संगठन नगरपालिका के द्वारा--शराब की दुकानों के चालू रखने के विरोध में--जाहिर किया है, वहाँ शराब की दुकानें चलाने का प्रयत्न किया जा रहा है। सर्व सेवा संघ स्थानीय लोक-निर्णय (लोकल आप्शन) के सिद्धान्त को बहुत महत्त्वपूर्ण मानता है, और उत्तरप्रदेश की सरकार का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहता है कि भारत के कुछ अन्य राज्यों ने, खासकर महाराष्ट्र सरकार ने, ग्रामीण क्षेत्रों के लिए इसे स्वीकार किया है। लोकतंत्रीय प्रशासन का यह एक सुन्दर सिद्धान्त है कि शराब की बिक्री के लिए चालू की जानेवाली शराब की सरकारी दुकानों के सम्बन्ध में उस क्षेत्र की स्थानीय जनता की भावनाओं का समादर किया जाय। संघ उत्तरप्रदेश की सरकार से अपील करता है कि अपनी नशाबन्दी की नीति को लागू करने की दिशा में इस सुन्दर सिद्धान्त का पालन करे।

(दिनांक २५-४-'६९ को सर्व सेवा संघ के तिरुपति अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव)

श्रद्धांजलि

श्री लोकेन्द्र भाई ने सूचना दी है कि झाँसी जिले के एक वयोवृद्ध गांधीवादी एवं सर्वोदय-विचार के प्रबल समर्थक एवं सहयोगी श्री बाबू गुरुदयालजी श्रीवास्तव (स्यावरी) का दिनांक १७ अप्रैल को झाँसी में ७५ वर्ष की आयु में निधन हो गया। हम सर्वोदय-परिवार की ओर से उनके दु:खी परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं तथा परमात्मा से स्वर्गीय श्री गुरुदयालजी की आत्मा की शान्ति के लिए कामना करते हैं।

साहित्य-प्रचार

बम्बई सर्वोदय मण्डल की एक सूचनानुसार जनवरी और फरवरी माह में ६,७८०.९२ रुपये का साहित्य बिका तथा निम्नलिखित पत्र-पत्रिकाओं के ग्राहक बनाये गये।

सर्वोदय साधना (मराठी)--	९०
सर्वोदय साधना (गुजराती)--	३७
साम्ययोग	६
भूमिपुत्र	१३९
भूदान-यज्ञ	८
सर्वोदय (अंग्रेजी)	१
अन्य	१९

www.vinoba.in

आंध्र भूदान-यज्ञ समिति के पक्ष में हाईकोर्ट का फैसला

वर्षों से चली आ रही भूदान की जमीन पर सरकारी धाँधली का अन्त

सन् १९५३ में हैदराबाद के नवाब निजाम साहब ने भूदान में ३६०० एकड़ जमीन का दान दिया था। उसमें से २३२४ एकड़ जमीन बंजर थी, जिसके बारे में वन-विभाग ने आपत्ति की कि यह जमीन उनकी है। उस समय के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री रामकृष्ण राव से इस प्रश्न पर चर्चा हुई, और निर्णय हुआ कि यह जमीन निजाम साहब की ही है, इसलिए उसे भूदान के हवाले किया जाय। इस निर्णय के बाद वन-विभाग ने कहा कि इससे अच्छी जमीन बँटवारे के लिए विभाग की ओर से दी जायगी। मुआवजे में दूसरी जमीन दी गयी लेकिन उसके बीस दिन बाद ही सरकार का दूसरा हुक्म आया कि हम यह जमीन नहीं देंगे, दूसरी देंगे। उसके बाद आन्ध्र सरकार बनी और उसने एक साल तक विचार करने के बाद कह दिया कि निजाम वाली जमीन ही भूदान-समिति को सौंप दी जाय। इसपर फिर एतराज हुआ और आखिर में उस समय के मुख्यमंत्री श्री संजीव रेड्डी ने कह दिया कि भूदान-यज्ञ समिति को जमीन देने की जरूरत नहीं, क्योंकि भूदान का इस पर कोई हक नहीं है, निजाम का भी नहीं था।

पूरे मामले को विनोबाजी के सामने पेश किया गया तो उन्होंने हाईकोर्ट में 'रिट' करने की अनुमति दी, इस शर्त के साथ कि एक बार पुनः मुख्यमंत्री से बातचीत की जाय। इसके अनुसार मुख्यमंत्री श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी के समक्ष सारी बातें पत्र द्वारा पेश की गयीं। मुख्यमंत्री ने एक निश्चित तारीख को आंध्र के भूदान कार्यकर्ता श्री रामकिशन राव तथा सर्वोदय मण्डल के लोगों से बातचीत की और मुआवजे में जमीन देने का वादा किया। लेकिन इस पर भी एक साल तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसलिए मजबूर होकर हाईकोर्ट में 'रिट' किया गया।

अब गत महीने के आखिरी सप्ताह में हाईकोर्ट ने फैसला किया है कि निजाम को यह जमीन दान में देने का पूरा हक था, इसलिए जमीन भूदान-यज्ञ समिति को दी जाय। हाईकोर्ट के जज ने यह भी कहा है कि सरकार को अपने वादों पर पाबंदी करनी चाहिए और समय-समय पर अपने निर्णय इस तरह नहीं बदलने चाहिए। आंध्र प्रदेश के भूदान-यज्ञ बोर्ड के उपाध्यक्ष श्री उमेलाल केशवराव ने यह 'रिट' पेश की थी। उनका कहना है कि अब इस २३२४ एकड़ भूमि पर सर्व सेवा संघ के मार्गदर्शन में एक गाँव बसाया जाना चाहिए। आंध्र के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं और मित्रों में हाईकोर्ट के इस फैसले से संतोष और उत्साह बढ़ा है। ०

उड़ीसा में शंकररावजी

श्री शंकररावजी देव ने उड़ीसा में चल रहे राज्यदान-अभियान में वेग लाने के लिए १३ दिन का समय क्रमशः कलाहांडी, सम्बलपुर, सुन्दरगढ़, केंदुझर, मयूरगंज, बालेश्वर, टेकानाल, कटक, पुरी, फुलबाणी और कोरापुट जिलों में दिया। उनकी कुल ११७६ मील की यात्रा हुई। यात्रा का प्रारम्भ ५ अप्रैल को खरियार रोड (कलाहांडी) से हुआ और उसकी समाप्ति १७ अप्रैल को जपुर (कोरापुट) में जिलादान समर्पण-समारोह से हुई।

उनकी इस यात्रा से ग्रामदान-अभियान कार्य में लगे कार्यकर्ताओं में काफी उत्साह पैदा हुआ है। कोरापुट जिले के करीब २० प्रमुख कार्यकर्ताओं की टोली श्री विश्वनाथ पटनायक के नेतृत्व में मयूरगंज जिलादान जल्द-से-जल्द पूरा करने के लिए लगेगी।०

भूदान-प्राप्ति तथा वितरण के प्रदेशवार आँकड़े

(३१ मार्च, १९६१ तक)

प्रदेश	जिलों की संख्या	भूमि-प्राप्ति (एकड़ में)	दाता संख्या	भूमि-वितरण (एकड़ में)	आदाता संख्या	खारिज भूमि	शेष भूमि
१. असम	६	११,९३५·००	७,३४४	२६५·००	—	—	११,६७०·००
२. आंध्र	२०	२,४१,९५२·००	१६,६२७	१,०३,३५१·००	२२,७३३	८६,३८५·००	५२,२१६·००
३. उड़ीसा	१३	१,८५,७८२·८०	८४,४५६	९६,४६३·९६	४२,६१४	—	८९,३१८·८४
४. उत्तरप्रदेश	५४	४,३५,४५७·५४	३८,२९६	२,१०,०९०·७३	७३,३१८	२,०१,६५३·४०	२३,७३३·४१
५. केरल	९	२६,२९३·००	—	५,७७४·००	—	७,९९९·००	१२,५२०·००
६. तमिलनाडु	१२	५१,३३०·००	२१,८९६	१६,३९४·००	११,१५३	—	३४,९३६·००
७. दिल्ली	१	३००·००	—	१८०·००	—	१२०·००	—
८. पंजाब-हरियाणा	१८	१४,७३९·००	—	३,६०१.००	—	३,३८०·००	७,७५८·००
९. गुजरात	१६	१,०३,५३०·२१	१८,३२७	५०,९२४·२८	१०,२७०	—	५२,६०५·९३
१०. महाराष्ट्र	८	१,०५,०९४·२४	१९,९५३	७०,९५०·२७	१५,१९९	३,३१५·८१	३०,८२८·१७
११. मध्यप्रदेश	४१	४,०५,७८६·१३	५८,३७५	१,७३,०६२·८९	४७,४४५	५६,४७६·९६	१,७६,२४६·२८
१२. मैसूर	१९	१५,८६४·००	५,०१७	२,१२३·००	९४१	—	१३,७४१·००
१३. प० बंगाल	१७	१२,९६०·००	—	३,८९८·००	—	८,४२६·००	६३६·००
१४. बिहार	१७	२१,२७,४५२·००	२,९७,२००	३,५१,४४३·००	२,२४,८५०	१३,६४,६३७·००	४,११,३७२·००
१५. राजस्थान	२६	४,३२,८६८·००	८,३९१	८४,७८१·०२	१३,१५८	१,२२,४८९·००	२,२५,५९८·००
१६. हिमाचल प्रदेश	६	५,२४०·००	—	२,५३१·००	—	—	२,७०९·००
१७. जम्मू-कश्मीर	१५	२११.००	—	५·००	—	—	२०६·००
	२९८	४१,७६,८१४·९३	५,७५,८८५	११,७५,८३८·१३	४,६१,६८१	१८,५४,८८२·१७	११,४६,०९४·६३

www.vinoba.in

सर्व सेवा संघ की नयी प्रबन्ध समिति

१.	श्री एस० जगन्नाथन्	अध्यक्ष
२.	,, पूर्णचन्द्र जैन	सदस्य
३.	,, सिद्धराज ढड्ढा	,,
४.	,, जयप्रकाशनारायण	,,
५.	,, गोविन्दराव देशपांडे	,,
६.	,, के० एम० नटराजन्	,,
७.	,, प्रभाकर	,,
८.	,, क्षितीशराय चौधरी	,,
९.	,, राममूर्ति	,,
१०.	,, वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी	,,
११.	,, सुन्दरलाल बहुगुणा	,,
१२.	,, कपिल भाई	,,
१३.	,, बाबूलाल मित्तल	,,
१४.	,, नारायण देसाई	,,
१५.	सुश्री निर्मला देशपांडे	,,
१६.	श्री राधाकृष्ण	,,
१७.	,, निर्मलचन्द्र	,,
१८.	,, मनमोहन चौधरी	,,
१९.	,, नरेन्द्र दूबे	सहमंत्री
२०.	,, कान्ता बहन शाह	,,
२१.	,, ठाकुर दास बंग	मंत्री

ट्रस्टी मण्डल

(१) श्री राधाकृष्ण
(२) ,, नारायण देसाई
(३) ,, विरधीचंद चौधरी
(४) ,, दत्तोबा दास्ताने
(५) ,, द्वारकादास जोशी
(६) ,, वी० रामचन्द्रन्
(७) बाबूलाल मित्तल—प्रबन्धक ट्रस्टी

मध्यप्रदेश-शिविर-शृंखला समाप्त

० मध्यप्रदेश गांधी स्मारक-निधि और प्रदेश सर्वोदय-मण्डल द्वारा संचालित गांधी-शताब्दी ग्रामस्वराज्य-शिविर शृंखला का छत्तीसवां और अन्तिम शिविर हाल ही में ग्वालियर में सम्पन्न हुआ। शिविर में जिले के कार्यकर्ताओं, शिक्षकों, अधिकारियों आदि ने भाग लिया। शिविरोपरान्त मुरार विकासखण्ड के गांवों में पदयात्राएँ हुईं। फलस्वरूप १२ ग्रामदान मिले।

* गांधी-शताब्दी कैसे मनायें ? *

★ आर्थिक व राजनैतिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण और ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के लिए ग्रामदान-आन्दोलन में योग दें।

★ देश को स्वावलम्बी बनाने और सबको रोजगार देने के लिए खादी, ग्राम और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दें।

★ सभी सम्प्रदायों, वर्गों, भाषावार समूहों में सौहार्द-स्थापना तथा राष्ट्रीय एकता व सुदृढ़ता के लिए शांति-सेना को सशक्त करें।

★ शिविर, विचार-गोष्ठी, पदयात्रा वगैरह में भाग लेकर गांधीजी के संदेश का चिंतन-मनन और प्रसार करें, उसे जीवन में उतारें।

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी-समिति), डुंकलिया भवन, कुन्दीगरों का भैरू, जयपुर-३ राजस्थान द्वारा प्रसारित।

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ २८-४-'६९ रजिस्टर्ड नम्बर एल. ११४ [पहले से डाक-व्यय दिये बिना भेजने की स्वीकृति प्राप्त] लाइसेन्स नम्बर पी ३४

जागतिक सन्दर्भ सर्वोदय-क्रान्ति के अनुकूल

राज्यदान के संकल्पों को पूरा करने और ग्रामस्वराज्य को साकार करने में सम्पूर्ण शक्ति लगे।

सर्व सेवा संघ के तिरुपति अधिवेशन का निवेदन

आवूरोड सम्मेलन के करीब एक साल बाद यह संघ अधिवेशन हो रहा है। इस वर्ष हमारा ध्यान ग्रामदान तूफान पर केन्द्रित रहा, और यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि इस अर्से में ग्रामदानों की संख्या एक लाख को लाँघ गयी, कई जिलादान हुए, और आठ प्रान्तों ने राज्यदान का संकल्प किया। इन प्रांतों की जनसंख्या २८ करोड़ याने भारत की जनसंख्या का ६० प्रतिशत है।

गांधीजी के स्वप्न को साकार करने की दिशा में इस उत्साहवर्धक प्रगति का सर्व सेवा संघ स्वागत करता है और अपना यह दृढ़-विश्वास प्रकट करता है कि इस गांधी शतसंवत्सरी के अन्दर सारे राज्यदान के संकल्प पूर्ण होकर रहेंगे, और यह आशा व्यक्त करता है कि देश के बचे हुए प्रांत भी राज्यदान के संकल्प की ओर अग्रसर होंगे। इन महान उपलब्धियों को संभव करने में जिन सेवकों, ग्रामवासियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों, सरकारी कर्मचारियों आदि ने योगदान दिया है, संघ उन सबका अभिनन्दन करता है।

बिहार के राज्यदान–संकल्प को, जो कुछ समय पहले ही पूर्ण होने की अपेक्षा थी, जल्द-से-जल्द पूरा करने के लिए विनोबाजी ने आवाहन किया है, और यह काम अगर यथासमय पूरा नहीं हुआ तो कोई नया गम्भीर कदम उठाने का संकेत किया है। संघ का मानना है कि संकल्प-पूर्ति की दिशा में अपनी सारी शक्ति केन्द्रित करने में बिहार के सर्वोदय सेवक, राजनीतिक पक्ष तथा सार्वजनिक जीवन के दूसरे तत्व कोई कसर नहीं रखेंगे। इस प्रयत्न में सारे देश से जो भी मदद की जरूरत हो, वह बिहार को उपलब्ध कराने के लिए संघ अपनी तत्परता प्रगट करता है।

आज कम-से-कम अठारह जिलों में चार करोड़ से अधिक जनता ग्रामदान में शरीक हुई है। इनकी आत्मशक्ति और अभिक्रम जाग्रत करने की ओर भी समुचित ध्यान देना आवश्यक है। सिर्फ उन गाँवों में तथा क्षेत्रों में ग्रामस्वराज्य की बुनियाद डालने के लिए नहीं, राज्यदान-अभियानों को आगे बढ़ाने के लिए भी यह आवश्यक है। अनुभव से यह सिद्ध हुआ है कि ग्रामदानी गाँवों के नागरिक तूफान आन्दोलन में एक महत्व की भूमिका अदा कर सकते हैं और मौके पर उसका नेतृत्व भी ले सकते हैं। ग्राम शान्तिसेना की परिकल्पना इसी उद्देश्य से की गयी थी। इसलिए संघ इस पर जोर देता है कि ग्रामदानी गाँवों से ग्राम शान्तिसेना के रूप में स्वयंसेवकों का एक विशाल समूह खड़ा करने की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए तथा ऐसे स्वयंसेवकों के संग्रह, तालीम और संगठन की सुव्यवस्थित योजना बननी चाहिए।

संघ यह अनुभव करता है कि आज के विश्व में तारुण्य-शक्ति का स्फोट एक आशाजनक संभावनाओं से भरी हुई घटना है। तरुण-शान्तिसेना के माध्यम से इस शक्ति को विधायक क्रान्तिकारी दिशा देने का प्रयत्न हो रहा है। तारुण्यशक्ति का उपयोग ग्रामस्वराज्य के काम में भी सफल रूप से हुआ है। इस प्रवृत्ति को मजबूत करने और आगे बढ़ाने की जरूरत संघ अनुभव करता है।

सर्वोदय के मौजूदा सेवकों के ज्ञान तथा सामर्थ्य के क्षितिज को अधिक-से-अधिक विस्तृत करते रहने की आवश्यकता आज पहले से भी अधिक अपरिहार्य हो गयी है। इसकी भी सुव्यवस्थित योजना बनाने पर संघ जोर देना चाहता है।

आन्दोलन के व्यापक बनने के साथ-साथ सर्वोदय के संगठन को मजबूत करने और नीचे उसे सक्रिय करने की भी जरूरत है। इस ओर ध्यान देने के लिए संघ सेवकों से अनुरोध करता है।

संघ मानता है कि त्रिविध कार्यक्रम के रूप में मूर्त ग्रामस्वराज्य के आन्दोलन के माध्यम से बुनियादी क्रान्ति का मार्ग उन्मुक्त होता है। आज दुनिया के कई घटना-प्रवाह सर्वोदय-आन्दोलन के अनुकूल हैं। विश्व की विद्रोही तारुण्यशक्ति ऐसे कई मूल्यों का प्रतिपादन कर रही है, जिनका सर्वोदय विचारधारा में बुनियादी स्थान है। चेकोस्लोवाकिया के निःशस्त्र प्रतिकार का अभूतपूर्व दृष्टान्त इसका संकेत है कि मार्क्सवादी विचारधारा के विचारक भी शान्तिमय तरीकों का महत्व महसूस करने लगे हैं। आज दुनिया में स्वतंत्र और क्रान्तिकारी चिन्तन की नयी-नयी धाराएँ फूट रही हैं जिससे क्रान्ति की रूढ़िगत विचारधाराएँ निष्प्रभ हो रही हैं। इन सब घटना-प्रवाहों से संघ को अपार उत्साह और प्रेरणा मिलती है और अपने मार्ग पर विश्वास अधिक दृढ़ होता है।

अतः संघ देश के सारे सर्वोदय सेवकों तथा सारे प्रगतिशील तत्वों से निवेदन करता है कि ग्रामस्वराज्य की क्रान्ति को सफल करने में वे अपने तन, मन और धन समर्पित करें। —तिरुपति, २५-४-'६९

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
www.vinoba.in
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।